कुल गीत

जब भी बात सुरों की होती
विद्या का स्वर भारी है
हमें गर्व है चरक का परिवार
माँ शारदे का पुजारी है।

शिक्षा ने संस्कार दिये है
और दी हमें शक्ति है
हम है प्रहरी हर मूल्यों के
और भारत की भक्ति है

शक्ति का सदैव सुनाती
हर तरफ हरियाली है
यहाँ की मिट्टी सबसे पावन
प्यार लुटाने वाली है

सच के आगे डर के रहना
ये पहचान हमारी है
हमें गर्व है चरक का परिवार
माँ शारदे का पूजारी है

हर कक्षा में जब अध्यापक
अपनी बात सुनाता है
पाठयक्रमों के संग–संग वो
अपना अनुभाव गाता है

कठिन प्रश्न हैं जीवन के जो
उन सबको सुलक्षायेंगे
यहाँ से हमने जो भी सिखा
बाहर भी सिखलायेंगे

हे चरक की शान निरानी
कहती दुनिया सारी है
हमें गर्व हैं चरक का परिवार
माँ शारदे का पुजारी है।

डॉ शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	शीर्षक	लेखक
1	कलयुग	डॉ बी.बी. सिंह
2	''एक जमीन में विकसित होती सभी के अस्तित्व की जड़े''	डॉ0 अनुराधा त्रिपाठी
3.	''गुरू'' – अर्थ, अवधारणा एवं स्वरूप	डॉ0 धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय
4	भारती समाज में नारी का स्थान	डॉ0 सीमा शुक्ला
5	प्लास्टिक से बिगड़ता पर्यावरण	डॉ0 सर्वेश कुमार सिंह
6	सावधानी में ही समझदारी	सत्येन्द्र प्रसाद
7	स्नेह से सनी सात्विक रोटियाँ	शशिकान्त मिश्रा
8	आधुनिक युग में शिक्षक की परिवर्तित भूमिका	प्रतिमा मिश्रा
9	मन के हारे हार, मन के जीते जीत	डॉ0 इरम दिवा
10	कृषिगत आधारभूत अवसंरचना	डॉ0 सतीश चन्द्रा
11	मैं हूँ आज की नारी आत्मविश्वास मेरी पहवान	उपमा सिंह
12	किशोरावस्था के बदलाव में एवं शिक्षण सम्बंधी चुनौतियाँ	अशोक सिंह यादव
13	महिला सशाक्ति करण : सामाजिक–आर्थिक स्थिति का वैदिक काल में परीक्षा	डॉ शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी
14	महाविद्यालयों में छात्र असंतोष का ''एक अध्ययन''	प्रेम प्रकाश पाण्डेय
15	बच्चों का मन	अजरा इस्लाम
16	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा	पूनम सिंह
17	''भारतीय समाज और शिक्षा का योगदान''	शिवकेश द्विवेदी
18	समय कोधन से भी ज्यादा संभालो	विनीत सिंह
19	लक्ष्य प्रप्तये आवश्यकमस्ति, आम्मसंयमः	अनिक कुमार अवस्थी
20	जीवित रखें पढ़ने का अभ्यास	वैशाली वर्मा
21	स्वयं अंदर से प्रकट होता है	हरि शंकर त्रिपाठी
22	स्वयं अंदर से प्रढ़ने का अभ्यास	राम नरेश यादव
23	पुस्तकालय	सावित्री मौर्या
24	मेरा लखनऊ	क्षमा अग्निहोत्री
25	प्रेम को जीवन में उतारे	जितेन्द्र सिंह
26	सीख	अमित मिश्रा
27	पर्यावरण प्रदूषण	रवि रावत
28	प्रदूषण	शशांक श्रीवास्तव
29	सबसे वफादर मित्र ''दुख''	सुनीता
30	एक शिक्षक का पत्र	अंकुरेश प्रताप जौहर
31	सह–शिक्षा–एक सुझाव	अंकुरेश प्रताप जौहर
32	विश्वास और शक एक सेठ की कहानी	हिमानी पाण्डेय
33	बढ़ते कदम	वन्दना मौर्या
34	सरकारी बस	अन्जू यादव
35	पिता रहनुमा	जमीर
36	विद्या	आरती
37	चरक इंन्स्टीट्यूट ऑक ऐजुकेशन	खुशबू गौतम
38	मूल–मन्त्र	अभिषेक गुप्ता
39	शिक्षक	उपासन सिंह
40	शायद लोग सही कहते है, अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ...	जूही सिंह
41	याद आती हो माँ	रोली यादव
42	सबसे अच्छी पढ़ाई	मो0 मुबारक खान
43	सपने	पूनम सिंह
44	छोटी मामूली बातें	राजेश कुमार

क्रमांक	शीर्षक	लेखक
45	माँ चन्द्रिका देवी	कुमकुम यादव
46	किताब	रणधीर मौर्या
47	जो होता है अच्छे के लिये होता है	रंगीता
48	सरदार बल्लर्भ भाई पटेल	अनुपम मौर्य
49	दोस्ती	स्वाती यादव
50	गौतम बुद्ध तथा उनकी शिक्षाऐं	सोनी गौतम
51	हमारा भारत कैसा है	नीरज निषद
52	सफलता के सोलह सूत्र	विपिन वर्मा
53	सफलता का पहला नियम 'भागो मत धागे'	दुर्गेश कुमार तिवारी
54	जल ही जीवन है	प्रवीण कुमार सिंह
55	मुस्कुराहट	खुशनुमा
56	कविता (ऐसी कार दिला दो) बाल दिवस विशेष	रवीन्द्र शुक्ला
57	शिक्षा	निधी शर्मा
58	आओ मिलकर पेड़ लगाये	अंकिता सिंह
59	जीवाश्मों की आयु निर्धारण	अत्कर्ष मिश्रा
60	पर्यावरण बचाओ	लक्ष्मी देवी
61	पानी रे पानी तेरा रंग कैसा?	प्रियंका त्रिवेदी
62	आदर्श शिक्षक पर दो शब्द	अरूल मिश्रा
63	Mativational Stary for Problom Saluing	मोहित अवस्थी
64	जीने की कला	मो0 शमीम
65	अगर सुख से जीने का अस्मान है।	इरफान बानो
66	आओ कुछ सीखे	पूँजा मिश्रा
67	परिश्रम सफलता की कुँजी है	पूँजा मिश्रा
68	बेटियाँ	हिना खान
69	जिन्दगी की आस (माँ)	हिना खान
70	जिन्दगी	चाँन्दनी साहू
71	पर्यावरण संरक्षण	विजय कुमार कश्यप
72	सीढ़ियाँ उन्हे मुबारक हो	सतीश
73	इतिहास की परीक्षा	शशांक श्रीवास्तव
74	एक सन्देश	सोनम सिंह
75	हर सुबह एक नयी उम्मीद	कीर्ति मल्ला
76	भारत में आशन्ति का कारण	देवराज
77	एक मुस्कान	सोनम सिंह
78	पिता	अनीता शर्मा
79	गाँधी जी की स्मृति में	गोविन्द अवस्थी
80	बदते स्पर्श	हिमानी पाण्डेय
81	चरण स्पर्श का महत्व	प्रियाशु त्रिवेदी
82	नारी के प्रति संन्देश	पूजा विश्कर्मा
83	पाण्डवाँ को अमर गाथा	स्वाती सिंह
84	मेरी माँ	लायबा खान
85	सुविचार	वैश्नवी गौतम
86	हाँ मैं एक लड़की हूँ	अनामिका गौतम
87	स्वामी विवेकानन्द जी की खास बातें	अंजली गुप्ता
88	गुरू ज्ञान का दीपक है	प्रजा तिवारी
89	प्रकृति की सुरक्षा की ओर	राखी गुप्ता
90	दोस्ती	गोविन्द अवस्थी

91	Value Education Empowerment of youth - An Approachable Approach	Dr. Anuradha Tripathi
92	Charak Vigyan Manch	Dr. Seema Shukla
93	National Serice Scheme Unit Chark Institute Education	Dr. Satish Chandra
94	Mahatma Gandhi's Ideas on Education	Megaha Negi
95	I am a Woman - A Phenomenal women	Dr. Iram Diva
96	Green Chemistry : The need of Dag	Dr. Seema Shukla
97	Application of Matrix	Dr. Adityaya Bajpai
98	Think Green	Sakshi Srivastava
99	Philosophy of Swani Vivekanand	Anup Kumar Gupta
100	Role of Natural Products in Drug Discovery	Mrs. Monika Saini
101	Importance of Physical Activity	Karan Vishnoi
102	Food Adulteration Article	Shivam Singh
103	Let Bygones Be Bygones!	Pooja Tripathi
104	Let By Gones By Bygones!	Pooja Tripathi
105	I Am Proud To be Girl	Khushi Rani
106	Grammar in a Poem	Saif Shekh
107	Science	Pooja Mishra
108	My Mother	Sana Saewar
109	The Most Important Influence in My Life	Sana Saewar
110	Importance of Sports in Student life	Gayatri
111	Life	Vaishali
112	Clean India (Poem)	Shivani Yadav
113	Why Not A Girl	Mahvish Khan
114	Women are to be Respected	Satish Kumar
115	Time	Upasna Singh
116	Value of Time	Garima Yadav
117	The Un Conditional Love	Mohvish Khan
118	Oil Eating Bacteria	Rheen Mehdi Rizvi
119	True Wards	Astha Maurya
120	I have my India	Goldi Yadav
121	Dedicated to My Teachers	Astha Maurya
122	What are Teacher ?	Goldi Yadav
123	Digital India	Kaneez Abid
124	Friendship is like Commerce	Goldi Yadav

Welcome

Our Outstanding Achievements

B.Ed. Departmental Competition

1. All India Essay Writing Event 2017

Organized By : Sri Ram Chandra Mission and United Nations Information Centre For India & Bhutan. Winners of All India Essay Writing Event 2017

Neha Mishra - B.Ed.
Amit Sharma - B.Ed.
Saman Zaidi - B.Ed.

2. Unifest Organised by Unity P.G. & Law College

I Position Holder in Solo Singing Competition.

Anurag Bajpai - B. Ed.

3. Tiesta Organised by Khwaja Mainuddin Chishti Urdu, Arabi, Farsi University : Winner of :

Singing Competition	Anurag Bajpai	I Position
Mehendi Competition	Divya Pal	II Position

4. All India Eassay Writing Event 2018

Organized By : Sri Ram Chandra Mission and United Nations Information Centre For India & Bhutan.

Winners	Hina Khan	B.Ed.
	Shruti Dwivedi	B.Ed.

Our Outstanding Achievements

B.Ed. Departmental Competition

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
1.	**G.K. Quiz Contest**	Team B		
	Current Affairs	Shashank, Anurag, Chittrekha, Vartika, Vipin, Priyanshu	I	I Sem
2.	**G.K. Quiz**			
	I.C.T	Team Mahatma Gandhi Shruti, Neelesh, Deshraj, Amit Sharma	I	I Sem
3.	**Gandhi Jayanti Program**			
	Poster Making	Divya Pal Ananya Singh Stuti Maurya	I II III	III Sem III Sem I Sem
	Slogan Writing	Akash Kumar Chaittrekha Aishwarya	I II III	III Sem I Sem III Sem
	Poetry	Anurag Bajpai Upasana Singh Reena Yadav	I II III	I Sem I Sem III Sem
4.	**Children's Day**	Team B		
	Quiz Contest	Vipin, Sushil, Deshraj Akash, Ananya, Divya Premlata, Parul	I	I Sem & III Sem
		Girl's Team		
	Jug war	Reena, Premlata, Priyanka Priya, Divya, Priyanshu Pooja, Pinki, Mansi	I	III Sem & I Sem
	Pace	Reena Yadav Vipin Kumar	I II	III Sem I Sem
	Musical Chair	Piniki Sahu	I	I Sem

Our Outstanding Achievements

B.Ed. Departmental Competition

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
5.	**Diwali Celebration**			
	Rangoli Competition	Garima, Praveen, Shruti, Mahesh	I	I Sem
		Sonam, Praveen	II	I Sem
		Chittrekha, Mansi, Varkita,Gaurav	III	I Sem
		Sushil, Ram		
	Diya Making	Kirti Bhalla	I	III Sem
		Pooja Vishwakarma	II	I Sem
		Pooja Kasshyap	III	I Sem
	Craft Work	Himani & Neelesh	I	I Sem
		Garima Yadav	II	I Sem
		Shalini Singh	III	I Sem
	Mahendi Competition	Pratiksha Saxena	I	I Sem
		Vartika Tripathi	II	III Sem
6.	**World Sparrow Day**			
		Shashank	I	II Sem
		Chandan Kumar	II	II Sem
7.	**International Women's Day Celebration**			
		Ankuresh	I	II Sem
		Shalini	II	II Sem
		Lyba & Abhishek	III	II Sem

CIE Departmental Competition

Faculty of Commerce

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
1.	**Poster Presentation**	**Sur Team**		
	Topic : "E-Commerce Post Present Future	Sandeep	I	B.Com III
		Kumkum	II	B.Com III
		Ajali	III	B.Com II
2.	**Oral Presentation**			
	(Different Topic)	Lucky	I	B.Com III
		Sumit	II	B.Com III
		Komal	III	B.Com II
3.	**Easy writing Competition**			
	Topic : Media Effect on Marketing and Business	Sandeep	I	B.Com III
		Shalu	II	B.Com III
		Kumakum	III	B.Com II
4.	**Collage Making**			
	Topic : Beti Padhao, Beti Bachao	Kumakum	I	B.Com III
		Priya	II	B.Com III
		Versha	III	B.Com III
5.	**One Minute Competition**			
		Meenakshi	I	B.Com III
		Neelam	II	B.Com III
		Versha	III	B.Com III

CIE Departmental Competition

Faculty of Science

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
1.	**Poster Presentation**			
	Sub : Chemistry Topic : "Hybridization"	Khushoo Rani Mansi Rawat Ayushi Srivastava	I II III	B.Sc. I B.Sc. II B.Sc. II
	Sub : Botany Topic : "Lichens"	Shivani Yadav Mahvish Khan Saif Khan	I II III	B.Sc. I B.Sc. I B.Sc. I
	Sub : Zoology Topic : "Tryparosoma"	Mansi Rawat Satish Kumar Samiya Khan	I II III	B.Sc. II B.Sc. I B.Sc. II
	Sub :Physics Topic : "Michelsen Inter ferro motor"	Astha Maurya Sweta Mishra Devesh Khan	I II III	B.Sc. I B.Sc. I B.Sc. I
	Sub : Mathematics Topic : "Matrix"	Sweta Mishra Astha Maurya Ashish Kumar	I II III	B.Sc. I B.Sc. I B.Sc. I
2.	**Oral Presentation**			
	Topic : Liquid State Computer	Kumakum Rohini Pal Upasana	I II III	B.Sc. I B.Sc. II B.Sc. III
3.	**Group Discussion**	**Team-A**		
	Topic : Transition Elements	Astha Maurya Samiya Khan Sonal Rawat Ashish SIngh	Ist	B.Sc. II
		Team-B		
		Khushoo Rani Shivani Yadav Mahvesh khan Satich Kumar	Ist	B.Sc. II

CIE Departmental Competition

Faculty of Science

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
4.	**Collage Making**			
	Sub : Chemistry Topic : "Swachh Bharat Abiyaan"	Shivani Yadav	I	B.Sc. I
		Mahvish Khan	I	B.Sc. II
		Astha Maurya	II	B.Sc. II
		Khushaboo	III	B.Sc. II
5.	**Antakshari Competition**			
		Kanchan Sharma	I	B.Sc. I
		Upasana Singh	II	B.Sc. I
		Vijay Kumar	III	B.Sc. I
6.	**One Minute Competition**			
		Moh. Saif	I	B.Sc. II
		Mohit Prazapati	II	B.Sc. I
		Moh. Usman	III	B.Sc. I
7.	**Speech Competition on "Internation Human Right Day"**			
	Topic : "Freedom and Equality"	Upasana Singh	I	B.Sc. II
		Kanchan Sharma	II	B.Sc. II
		Anju Yadav	III	B.Sc. II
8.	**Debate Competition**			
	Topic : "Effect of Working Women in Indian Family"	Moh. Saif	I	B.Sc. II
		Shivani Yadav	II	B.Sc. II
		Ashish Kumar	III	B.Sc. II
9.	**Essay Competition on "National Pollution Control Day"**			
	Topic : "Global Worming"	Ashish	I	B.Sc. I
		Vijay K. Kashyab	II	B.Sc. II
		Ashish Kumar	III	B.Sc. III
10.	**Science Quir on "National Energy Conservation Day"**			
		Ravi Kanojia	I	B.Sc. I
		Mohit Sharma	I	B.Sc. I
		Ashish Sahu	II	B.Sc. I
		Mohit Kumar	III	B.Sc. I

CIE Departmental Competition

Faculty of Science

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
1.	**Collage Making on National Science Day**			
	Topic : "Science in Daily Life"	Samiya Khan Astha Maurya Goldi	I II III	B.Sc. II B.Sc. II B.Com III
	Slogan Writing			
	Topic : "Healthy Vision with Healthy Mind"	Goldi Kamal Sonal Rawat	I II III	B.Com II B.Com II B.Sc. II
2.	**"Hindi Diwas Celebration**	**Sur Team**		
	Topic : "Hindi Gyan Pratiyogita"	Anil Rahnuma Ram Subhash Verma Priya	Ist	B.Ed. II B.Sc. I B.A. B.Com III
		Kabir Team		
	Topic : "Hindi Gyan Pratiyogita"	Desh Raj Abhishek Niraj Nishad Kumkum	IInd	B.Ed. II B.Sc. I B.A. B.Com III
		Tulsi Team		
	Topic : "Hindi Gyan Pratiyogita"	Pooja Vishva Kumar Kajal Anuj Sandeep	IIIrd	B.Ed. I B.Sc. I B.A. B.Com III
3.	**"Poetry Competition"**			
		Aman Srivastva Preeti Shivani Singh	I II III	B.Ed. II B.A. B.Sc. I
4.	**"Speech Competition"**			
		Seeshil Sahu Virandra Yadav Nilesh Singh Rathore	I II III	B.Ed. III B.Ed. III B.Ed. III

CIE Departmental Competition

Faculty of Science

S.No.	Activity Name	Student	Position	Class
5.	**"Mehandi Competition"**			
		Shilpi	I	B.A.
		Anju Yadav	I	B.Sc. II
		Komal	II	B.Com II
		Goldi	III	B.Com II
5.	**"Wall Magazine Competition on Independence Day"**			
	Topic "Incredible India "	Km. Mansi Prazapati	I	B.Ed. II
		Komal	I	B.Com II
		Preeti	II	B.A. II
		Mohit Prazapati	III	B.Sc. I

हिन्दी कल्प

कलयुग

डॉ. बी.बी. सिंह
सेवानिवृत्त, क्षे.उ.शि.अ.
लखनऊ

हिन्दुओं की सनातन काल–गणना के अनुसार यह कलयुग है, विज्ञान का उद्घोष है कि यह कलयुग है। मनुष्य का शरीर स्वयं एक कल या यन्त्र है, यह यन्त्र प्रकृति–कृत है। इस यन्त्र की रचना विचित्रताओं से भरी है। इसकी सूक्ष्मता और इसकी क्रियाशीलता का पूरा रहस्य अभी तक विज्ञान के लिए भी सम्भव नहीं हुआ है, किन्तु विविध यन्त्रों की रचना में सफलता प्राप्त करते हुए आधुनिक वैज्ञानिकों की यह महती आकांक्षा है कि वे प्रकृति की होड़ में चलकर मानव शरीर को स्थायी रूप से प्राण –दान में समर्थ हो सकें। कलयुग की यह परिणति होगी।

मनुष्य विचारशील प्राणी है। उसकी विचार शक्ति का सतत विकास होता आया है। अपनी इस शक्ति का उपयोग वह आरम्भ से ही अपने वातारण पर अधिकार प्राप्त कर विजय प्राप्त कर प्राकृतिक नियमों का रहस्य जानकर उन्हे अपनी सुख–सम्पन्नता के लिए नियोजित करना ही मनुष्य का लक्ष्य रहा है। आधुनिक यन्त्रों के अवलोकन से उद्भूप हई। यन्त्र–विशेष में निहित मैलिक सिद्धान्तों का स्थिर कर लेने के पश्चात उन सिद्धान्तों के किंचित उलट–फेर और परिवर्तन से अनेकानेक अन्य यन्त्रों या मशीनों से कार्य कराने का अभ्यस्त होता जा रहा है। इससे शक्ति, श्रम और समय तीनों की बचत होती है। मशीन पर मनुष्य की निर्भरता इतनी बढ़ती जा रही है।, कि मन में यह संदेह होने लगा है कि मशीन मनुष्य का गुलाम है या मनुष्य मशीन का।

कल्पना कीजिए उस समय की, जब मनुष्य नग्न अवस्था में जंगलों में, गुफाओं में अथवा वृक्षों पर रहता था और दिन भर के परिश्रम के बाद कहीं क्षुधा शांत कर पाता था। अपने शरीर–बल से ही उसे अपनी रक्षा करनी पड़ती थी । उसकी कर्मेन्द्रियों ही उसकी आयुष थी। उन्हीं से वह अपने प्रतिद्वन्दी जन्तुओं से मोर्चा लेता था और अपने प्राण बचाता था। तब उसने पत्थर के हथियार बनाये, कदाचित यह उसका पहला अन्वेषण था। यहीं से सम्यता का उदय मानना चाहिए। इसके आगे सथ्यता और अन्वेषण साथ–साथ चलने लगे। मनुष्य अन्वेषण करता गया और मानव सम्यता आगे बढ़ती गयी। उसकी एक बहुत मंजिल तब पार हुई जब मनुष्य स्वचालित मशीनों का अविष्कार कर सफल हुआ। यह घटना 17 वीं शताब्दी की है। यूरोप में औद्योगिक क्रांति का जन्म स्वचालित मशीनों के परिणामस्वरूप ही हुआ। उस क्रांति के चरण अब भी आगे बढ़ते जा रहा है। परिश्रम से क्लान्त और पसीने से लथ–पथ अर्द्धनग्न और क्षुधा–पीड़िता, हाँफते हुए फिर भी कार्यरत मध्यकालीन मनुष्य के चित्र के बगल में बीसवीं शताब्दी के वातानुकूलित कक्ष में स्प्रिंगदार कुर्सी पर आसीन, सिर से पैर तक भव्य भूषा से आच्छादित, सिगरेट का कश खींचते हुए एक हाथ में मोबाइल लिए हुए और दूसरे ये बिजली का बटन दबाते हुए मनुष्य का चित्र रखकर देखिए तो आपको दोनों चित्रों की विषमता पर आश्चर्य होगा। इस विषमता का रहस्य मशीन में है। मशीन ने मनुष्य के जीवन में महान क्रांति उपस्थित कर दी है। एक के बाद दूसरी मशीन बनती जा रही है, और क्रांति का क्रम आगे बढ़ता जा रहा है। इस यन्त्रीकरण का अन्त कहाँ होगा। आज इसे सोचने के लिए मनुष्य नहीं बैठ सकता है

वैज्ञानिक अविष्कारों ने मनुष्य को ऐसे संहारकारी आयुद्ध दिये है, जिससे क्षणभर में उसकी सभ्यता नष्ट हो सकती है। यह भी तो मशीन की बलिहारी है। अपनी अविष्कृत मशीनों के बल पर आज वह चन्द्रमा की सैर कर रहा है। मशीन के बल से वह वर्षों की दूरी घंटों में तय कर लेता है। मशीन उसे सागर की अनन्त गहराई तक नीचे उतारकर पलक मारते फिर ऊपर ला देती है। मशीन से मनुष्य वह कार्य घंटों में सम्पन्न करने में समर्थ हो रहा है। जिसे हाथ से पुरा करने में हजारों आदमियों को कई वर्ष लगते। भारी से भारी और सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य आज मनुष्य स्वनिर्मित मशीनों अथवा यन्त्रों से ले रहा है। मशीन का मनुष्य का स्थानापन्न बनती जा रही है। मशीन मनुष्य ये आगे बढ गयी है, क्योंकि उसमें अधिक शक्ति है। उसमें अधिक दक्षता है और वह अल्प समय में अधिक कार्य सम्पन्न कर लेती है।

निस्संदेह यह कलयुग है। मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में कलों अथवा यन्त्रों का प्राधान्य है। उसकी दिनचर्या कल–चालित है। हर बात में उसका यही प्रयत्न है। कि काम कल से हो जाये, हाथ न लगाना पड़े। जिस युग की ऐसी मनोवृत्ति हो रही है उसे कलयुग कहना ही उपयुक्त है।

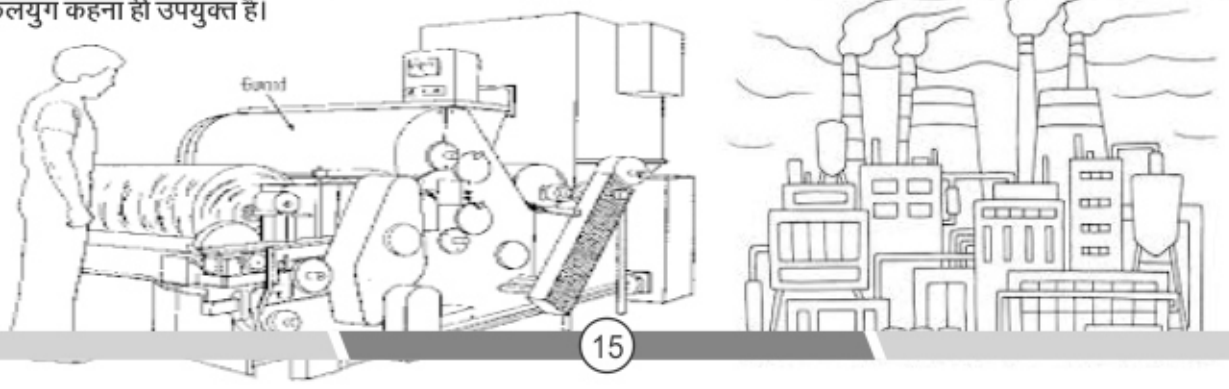

''एक जमीन मे विकसित होती सभी के अस्तित्व की जड़े''

डॉ0 अनुराधा त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष
(बी0एड0 विभाग)

वह एक बड़ा–सा बादल था जो कि सुन्दर सी हरी भरी धरती के ऊपर आसमान में था। एक दिन उसने अपने पास खुद से भी बड़ा बादल देखा, उसे ईष्या होने लगी, खुद से बड़े बादल को देखकर, उसे स्वयं को सबसे बड़ा बनाने का उपाय सूझा। उसने निश्चय किया कि वह इस बार बारिश में अपना पानी धरती पर नहीं बरसायेगा और ज्यादा से ज्यादा पानी इकट्ठा कर बहुत बड़ा बन जायेगा इस बार उसने पानी नहीं बरसाया और धीरे–धीरे नीचे की धरती सूखने लगी, पेड़ पौधे मुरझाने लगे और तालाब का पानी भी समय के साथ खत्म होने लगा। पूरी जमीन मरूस्थल बन गई। बादल को यह एहसास भी नही हुआ कि उसे बढने के लिए पानी कहा से मिलेगा धीरे–धीरे उसका आकार छोटा होने लगा वह कुछ समय बाद इतना हल्का हो गया कि उसे हल्के हवा के झोंके ने दूसरी तरफ पहुँचा दिया, वहाँ हरियाली थी वहां वह पानी पाकर बड़ा हो गया, अब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ कि किस तरह अपने स्वार्थ में उसने जमीन को सुखा दिया था। वह घना होकर धीरे–धीरे फिर सूखी जमीन पर पहुँचा और खूब जमके बरसा वही सूरज की किरणो से एक सुन्दर इन्द्रधनुष बन गया और चारो ओर सुन्दरता बिखर गयी। बादल को समझ में आ गया था कि जो वह पानी देता है वही फिर से भाप के रूप में उसे वापस मिलता है और उसका अस्तित्व तभी है जब खुल के सब कुछ दे जो उसके पास है।

कुछ ऐसा ही हमारे जीवन में भी होता है हम जो देते है वही पाते है। यहँ ये भले भौतिक वस्तुओ पर लागू न हो परन्तु नैतिक मूल्यो व ज्ञान के मामले में सौ फीसदी लागू होता है जितने नि:स्वार्थ भाव से हम मूल्यो व ज्ञान का दान करेगे उतना नया ज्ञान पाने की सम्भवना बनेगी।

'गुरू' – अर्थ, अवधारणा एवं स्वरूप

डॉ0 धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय
(अध्यक्ष हिन्द विभाग)

भारत ही नहीं अपिंतु सम्पूर्ण संसार में चिन्तन एवं साधना के क्षेत्र में गुरू का स्थान अविवादग्रस्त एवं सर्वमान्य रहा है। मानव इतिहास की श्रेष्टतम् विभूतियों ने 'गुरू' रूपी गौरवमयी पदवी को अपनाया है। तथा समस्त युगों के अनेक धार्मिक नेताओं और समाज सुधारकों ने इस गौरवमयी पद ''गुरू'' को अंगीकार करके, इसके गौरव में अभिवृद्धि की है, जैसे–कृष्ण, बुद्ध, गाँधी, सुकरात, मुहम्मद साहब, कन्फ्यूशियस, चाणक्य, कबीर, तुलसी आदि सभी सच्चे अर्थो में मानव जाति के गुरू ही थे जिन्होंने समाज को एक नयी दिशा दर्शाते हुए उनका उचित मार्गदर्शन किया।

'गुरू' आज से ही नहीं अपित अनादिकाल अर्थात् वैदिक काल से ही समाज में सम्मानित होता रहा है। धर्म और समाज की नियामिका शक्ति भी उन्हीं 'गुरू' के हाथ में रही है, यह केवल आध्यात्मिक, सामाजिक अथवा वैयक्तिक क्षेत्र में प्रभावकारी सिद्ध नहीं हुआ, वरन् उससे प्रेरणा प्राप्त करके शिष्यों ने राजनैतिक कांतियां अर्थात् सत्ता परिवर्तन तक किया है।

ऐसे त्यागमयी, सम्माननीय, गौरवमयी, 'गुरू' पद के बारे में और अधिक कहने से पहले उसके अर्थ के बारे में जान लेना आवश्यक है, क्योंकि 'गुरू' शब्द कानों में पड़ते ही एक आदर्श, त्यागमयी, प्रतिमा उभर कर सामने आ जाती है। उस त्यागमयी प्रतिमा अर्थात् 'गुरू' के अर्थ को परिभाषित करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ग्रंथों में 'गुरू' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए हैं जिन्हें प्रसंगवश यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

'गुरू' का अर्थ–

वाचस्पत्यम् में 'गुरू' शब्द की मीमांसा करते हुए तर्क वाचस्पति श्री भट्टाचार्य लिखते है ''गिरत्यज्ञानं गृणात्युपदिशति धर्म्म'' अर्थात् शिष्य के अज्ञान का निराकरण करके धर्म का उपदेश देने वाले को 'गुरू' कहते है।

अन्य कोशकार 'गुरू' का अर्थ इस प्रकार बताते हैं–

''गुकारस्तमसि प्रोक्तो रूकारस्तन्निवर्तक:।''

इसके अनुसार 'गु' का अर्थ है 'अन्धकार' और 'रू' का अर्थ है– 'हटाने वाला'।

अर्थात 'गुरू' वह है जो अंधकार को हटा दे। एक सूक्ति भी है 'अंधकारं गिरति इति गुरू:।'

व्याकरण शास्त्र से गुरू को देखें – ''गुणातीति गुरू:''।

' गृ निगरणे' धातु से अर्थ लेते है– जो अंदर से कुछ निकाल कर दे, वह गुरू कहलाता है। निरूक्तकार श्री यास्काचार्य जी भी 'गुरू' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि सहज भाव से आवांटित संस्कारों को खोद–खोद कर निकालने और उनकी जगह अमृत अर्थात् ज्ञान भर देने वाले को गुरू कहते है।

श्री विशाल मंगलवाड़ी जी ने अपने ग्रंथ (THE WORLD OF GURUS) में 'गुरू'

का अर्थ बताते हुए लिखा है– 'गुरू' शब्द गुरू (ऊ) से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है, ऊपर उठाना, प्रहार करना, मार डालना, प्रयास करना, खा जाना आदि।

अत: गुरू वह है जो नानाविध साधनात्मक यंत्रणाएं देकर शिष्य के अज्ञान का हनन अथवा निगरण कर लेता है और उसके चरित्र को परिशुद्ध एवं समुन्नत बना कर उसे मुक्ति के मार्ग पर आरूढ़ कर देता है।

उपर्युक्त विद्वानों के 'गुरू' विषयक विचारों एवं 'गुरू' शब्द के बताए अर्थों का अवलोकन करते हुए निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि 'गुरू' शब्द निम्नांकित अर्थों एवं व्यापारों का सूचक या द्योतक होता है–

1. शिष्य के अज्ञान का निगरण।
2. शिष्य के अवांछित संस्कारों का उन्मूलन।
3. बिना दु:ख दिए–शिष्य कल्याण ।
4. साधनात्मक यन्त्रणाओं के द्वारा शिष्य के अज्ञान का हनन तथा चरित्र का परिष्कार।
5. धर्मोपदेश का दान।
6. ज्ञान–विज्ञान का दान।
7. अंधकार का उन्मूलन कर प्रकाश का दान।
8. ईश्वरीय गुणों का स्थूल मानवीय स्वरूप।

'गुरू' की अवधारणा–

हमारे पौराणिक ग्रंथों ने सृष्टि का कम ब्रहा, विष्णु, हमेश आदि देवों से अंकित किया है तथा ब्रहा अथवा शंकर को आदि गुरू तथा दर्शन लेकर नृत्य तक सभी विद्याओ का आदि प्रवर्तक भी कहा है। वेद तो साक्षात् ब्रहा के ही वाक्य है, और व्याकरण शास्त्र भगवान शंकर से डमरू नि: सृत नाद से उद्भूत है, नृत्य एवं गयान भी नटराज भगवान शंकर से आरम्भ होकर गति से चला आ रहा है। इसी क्रम में जीवन प्रत्येक कार्य के लिए 'गुरू' की आवश्यकता का अनुभव हुआ। यही कारण है कि जीवन में माता–पिता, गुरू, दीक्षा गुरू, शास्त्र गुरू, शस्त्र गुरू, सद्गुरू, जगतगुरू, सभी का अपना स्थान तथा अपनी मर्यादाएं है। सबके मूल में समाज में प्रचलित गुरू की भावना ही प्रमुख रहती है। किसी समय में तो गुरू के हाथ में समाज की नियामिका शक्ति होती थी। 'गुरू' की पहचान –

'गुरू' शब्द मस्तिष्क में आते ही अन्दर से एक प्रश्न उठता है, कि किस व्यक्ति, सन्त या आचार्य को 'गुरू' कहा जाए और किस तरह से पहचाना जाये, कि यह गुरू है या नही? अर्थात् किन गुणों से युक्त व्यक्ति को गुरू की संज्ञा से अभिहित किया जाए।

इसी सन्दर्भ में पॉल ब्रंटन, के0जी0शर्मा तथा अन्य बहुतेरे अन्वेषियों ने ऐसे गुरू की दुर्लभता और साथ ही उनकी पहचान की कठिनाई का उल्लेख किया है। पर गुरू रूप में अपनी आत्माा का वरण क्या कम दुष्कर है? अहम् की झूठी–सच्ची प्रेरणाओ से अलग करके अपने आन्तरिक गुरू की सही आवाज को पहचान ले सकना क्या कम कठिन है? यह ठीक है, कि सिंहों के लहड़े नहीं होते, हंसों की पाँत नही होती, लालों की बोरियां नहीं मिलती और सच्चे साधु जमात बाँध कर नहीं चलते । हर कीमती चीज दुर्लभ होती है, पर दुर्लभ को सुलभ बना देना जिस सत्ता के हांथ में है, उसे इस बात की खबर है कि सच्ची लगन कहां और किसमें है। जहां आग जलती है, वहां ऑक्सीजन दौड़ पड़ती है। जहां सच्ची तड़प पैदा होती है, वहां सच्चे गुरू को आना पड़ता है।

विवेकानन्द का जन्म और रामकृष्ण का अवतरण एक घटना के दो आयाम है। नकली गुरूओं से असली गुरू को छांटकर अलग नहीं करना पड़ता है, वह खुद छंट कर अलग हो जाता है। सच्ची आवश्यकता चुम्बकीय शक्ति काठ और पत्थर जैसे तथा कथित गुरूओं की भीड़ में से लोहे जैसे समर्थ गुरू को सहज भाव से अपने पास खींच लेती है।

यह जिज्ञासा उठना तो स्वाभाविक है, कि ऐसे शक्ति सम्पन्न 'गुरू' कैसे पहचाना जाये–

इस पर प्रकाश डालते हुए ब्रहम्लीन डॉ0 श्री चतुर्भुज सहाय जी लिखते हैं – 'जब तुम साधु या संत व महात्मा के उसकी जांच करने की नीयत से पहुंचों तो पहले उसको प्रणाम करों। फिर चुपचाप अदब से एक ओर जा बैठो। बातें भी अधिक न करो। यदि वह तुम से कुछ पूछे तो उसका उत्तर नम्रता से दो और चुप रहो। उस समय तुम अपने नियम का कर्म भी न करो, जैसे जाप, प्राणायाम या ध्यान इत्यादि। तात्पर्य यह है कि उस वक्त थोड़ी देर के लिए तुम शरीरिक और मानसिक कर्मों से बिल्कुल शून्य हो जाओ। फिर अपने मन की ओर देखो कि इस समय यह क्या कर रहा है। यदि उस उसम मन शान्त और आनन्दमय हो, घरबार और काम धन्धे की फिक्र से उस समय मन को वैराग्य हो गया हो तो समझ लो कि यह सत्य पुरूष द्वन्द्व के पार पहुंच चुका है, गुरू बनाने के लायक है और यदि ऐसा न हो, हम जैसे के तैसे ही रहें तो उसका त्यागना ही उचित है, वह अभी अपूर्ण है और न गुरू कहलाने का हकदार है।

नरेन्द्र कोहली जी ने अपनी रामकथा 'अभ्यूदय–' में एक स्थान पर गुरू विश्वमित्र जी से अपने शिष्य राम लक्ष्मण के

सम्मुख जो कहलवाया है वह प्रसंगवश यहां उल्लेखनीय है–

'ऋषि का चोला ओढ़ ही कोई ऋषि नही हो जाता, जैसे केवल लेखनी चलाकर कोई कवि नहीं हो जाता या शिष्यों को लिखा पढ़ा कर कोई गुरू नहीं हो जाता। केवल वाहयाचार ही पर्याप्त नहीं। कर्म,दायित्व, सत्य निष्ठा और दृढ़ चरित की भी आवश्यकता होती है।'

अर्थात् गुरू वही है जो कर्म दायित्व, सत्य निष्ठ और दृढ़ चरित्र से युक्त हो, आदर्श गुरू भी वही हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. कल्याण के उपासना अंक में प्रकाशित श्री प्रभुदत्त शास्त्री 'गुरूपासना' शीर्षक निबन्ध पृ0 628
2. GURU PURNIMA SPECIAL ISSUE OF YOGA - July 1977, Page No. 9
3. SHRI VISHAL MANGALWADI : THE WORLD OF GGURU, Page. 8
4. आचार्य शिवचन्द्र प्रताप, 'भारतीय चिन्तन में गुरू–धारणा और भक्ति काव्य' पृ0 19।
5. नरेन्द्र कोहली–अभ्युदय भाग–1, पृ0–156

भारतीय समाज में नारी का स्थान

डॉ0 सीमा शुक्ला
अध्यक्ष, विज्ञान संकाय
(रसायन विज्ञान विभाग)

मातृ देवो भव' के अनुपम उद्घोष से अनुप्राणित भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का सदा से ही अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान रहा है। 'यत्रा नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रा देवता' कहकर मनु ने उसके गौरव को द्विगणित कर दिया है। नारी विघाता की अनुपम एवं सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है। उसमें करूणा, ममता, स्नेह, सहिष्णुता आदि गुण स्वाभाविक रूप से विधमान रहते है। अपने विविध रूपों में स्त्री ने पुरूष को संवर्द्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। समाज की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक उपलब्धियों व सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का सच्चा प्रतीक स्त्रियाँ व उनकी स्थिति होती है। नर तथा नारी समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए होते है। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है, अस्तित्वहीन है। तुलसी को तुलसीदास बनाने में श्रेय उनकी पत्नी रत्नावली को है। कालीदास को विघोत्तमा की उपेक्षा ने ही कवि कुलगुरू के गौरवमय पद को प्राप्त कराया।

वास्तव में नारी को महिमा अनन्त है। नारी सृष्टि के आरम्भ काल से ही अत्यन्त्रा गुणों का भंडार रही है। पृथ्वी जैसी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, चन्द्रमा समान शीतलता, समुद्र के समान गम्भीरता, एक साथ नारी के हदय में दृष्टिगोचर होती है। वह गुरू के जीवन के समान हमें शुभ कार्यो के लिये प्रेरित करती है।

प्राचीन भारतीय समाज में नारी की स्थिति :–

प्राचीन काल में धर्म ग्रन्थों का अवलोकन करने पर पता चलता है कि दैवीय स्वरूपा नारी को सर्वशाक्तिमान, सामर्थ्यवान एवं वात्सल्यमयी करूणा एवं ममता का सागर आदि अनेक गरिमामय पद्नामों से विभूषित किया गया है। प्रथम वैदिक काल में पुत्र–पुत्री के सामाजिक व धार्मिक अधिकारों में बहुत अधिक अन्तर न था। पुत्र की भाँति पुत्री को भी उपनयन, शिक्षा–दीक्षा व यज्ञादि का अधिकार था। गृहकार्यो के अतिरिक्त कन्याओं को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। कन्याएँ पुत्राों की भाँति ही ब्रहमचर्य का पालन करती हुई अध्ययनरत रहती थी। उस समय की प्रसिद्व दार्शनिक, शास्त्राार्थ करने वाली कवियत्री तथा विशिष्ट स्त्रियाँ थी। इनमें धोषा, सूर्या, विश्वांवरा, इन्दाणी, सर्वराज्ञी, जुहू, श्रृद्वा, मैत्रोयी, गार्गी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

धार्मिक क्षेत्र में स्त्री पति की सहभागिनी थी विधवाओं को पुर्नविवाह का अधिकार था। स्त्रियों पर्दा प्रथा न होने के कारण धार्मिक व सामाजिक कार्यो में अपने पति को सहयोग दे सकती थी। हिन्दू संस्कृति के अनुसार कोई भी धार्मिक कार्य बिना स्त्री के

पूर्ण नहीं होता था। इस प्रकार वैदिक युग में स्त्रियों को यथा सम्भव ऊँचा स्थान दिया गया था। इसके बाद धीरे–धीरे आर्य विजय प्राप्त करते रहे और पराजितों की स्त्रियों की बहुलुता हो गई। फलस्वरूप बहुपत्नी प्रथा, दास प्रथा जैसी प्रथाओं का प्रचलन हुआ। महाकाव्य काल तक पहुँचते–पहुँचते बहुपत्नी प्रथा व सती प्रथा का प्रचलन हो गया।

मौर्यकालीन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी इस युग में बाल–विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। परन्तु बहु विवाह प्रथा, अर्न्तजातीय विवाह तथा विधवा विवाह समाज में प्रचलित था। इस प्रकार मौर्यकाल में स्त्रियों की दशा संतोषजनक थी। इस काल के पश्चात गुप्तकाल में स्त्रियों की दशा अपेक्षाकृत निम्न हो गई। जिसके फलस्वरूप उच्च शिक्षा का द्वार उनके अरूद्व हो गया पतिवरण की स्वतन्त्रता प्राय: लुप्त हो गई ।

हर्ष कालीन समाज में माता का उच्च स्थान था। उनकी उचित सेवा न करने वालों को कठोर दण्ड मिलता था। स्त्रियों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध था। इस प्रकार स्त्रियों की दशा शनै: शनै अधोन्मुखी होती रही।

मध्यकालीन युगीन भारत में नारी की स्थिति :–

राजपूत स्त्रियों का बहुत आदर व सम्मान करते थे। उनके सम्मान व सतीत्व की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते थे।

राजपूत स्त्रियों व कन्याओं को राजपूत पुरूषों के समान युद्ध विघा की शिक्षा दी जाती थी। इस युग में ग्रामीण स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ थी। ग्रामीण महिलायें कृषि कार्य के अतिरिक्त अपने बच्चों का पालन पोषण करती थी। मध्यकाल में रजिया सुल्तान ने एक शासिका के रूप में भारतीय शासन की बागडोर सम्भाला था।

मध्यकाल में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों को कम सम्मान मिला। हिन्दू संस्कृति में केवल एक विवाह का प्रचलन था किन्तु मुस्लिम संस्कृति में बहुविवाह का प्रचलन था इसलिये उच्चवर्ग ने बहुविवाह की रीति को अपना लिया। जिसके कारण भारतीय महिला भोग विलास की वस्तु समझी जाने लगी। हिन्दुओं में मुसलमानों के प्रभाव के कारण पर्दा प्रथा का आरम्भ हुआ। सम्पन्न परिवारों में एक से अधिक पत्नियों को रखना फैशन बन गया। अकबर जहाँगीर और शाहजहाँ के हरम में हजारों की संख्या में स्त्रियाँ थी उस समय बाल विवाह का भी प्रचलन हुआ। स्त्रियों की दशा शोचनीय होती जा रही थी। मध्यकाल में हिन्दू स्त्रियों में सती प्रथा का प्रचलन था। पति की मृत्यु हो जान पर वे उसकी चिता में जल जाती थी। इस काल में दहेज प्रथा का भी प्रचलन हुआ था। इस मध्यकालीन युग में भारत में स्त्रियों की दशा असंतोषजनक थी। मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद शताब्दी तक स्त्रियों की दशा अविकसित रही।

ब्रिटिश कालीन भारत में नारी की स्थिति :–

अंग्रेजों के अत्याचारों से विघटित संयुक्त परिवारों की अस्त व्यस्त आर्थिक स्थिति का सबसे अधिक दुष्प्रभाव स्त्रियों की स्थिति पर पड़ा। पहले से ही शोसित नारी का समाज में और अधिक पद दलित तथा पीडित हुआ। स्त्रियाँ पराधीन थी। उनकी दशा अत्यन्त दयनीय थी।

भारतीय पुनर्जागरण एवं विभिन्न सुधारकों द्वारा नारी दशा सुधार के प्रयास :– 18 वी शताब्दी भारतीय पुनर्जाग्रति का काल भी मानी जाती है। जिन सुधारकों ने नारी दशा सुधार के प्रयास किये उनमें राजा राम मोहन राय का नाम अग्रणीय है। अपनी भाभी को चिता में जलते देख वे तिलमिला उठे और उन्होने सती प्रथा को समूल नष्ठ करने का दृढ संकल्प कर लिया। 1828 में उन्होंने ब्रहमसमाज की स्थापना की जिसमें स्त्री समाज में व्याप्त समस्त कुरीतियों का विरोध किया। राजा राम मोहन राय ने तत्कालीन ब्रिटिशा गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बैन्टिक को हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों और विशेषकर सतीप्रथा को अवैध घोषित करने के लिये प्रेरित किया और इसमें वे सफल हुए। दिसम्बर 1929 में विनिय 17 के अन्तर्गत विधवाओं को जलाना अवैध घोषित कर दिया गया । इस प्रकार राम मोहन राय के अनवरत प्रयत्न से सती प्रथा पर रो लग गई।

इसके पश्चात महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, ईश्वर चन्द्र विघासागर, केशव चन्द्र सेन (1834–84), महादेव गोविन्द रानाडे(1842–1901), महर्षि डी0के0 कर्वे(1858–1962), दयानन्द सरस्वती (1824–1853), स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) पंडित रमाबाई (1855–1922), श्रीमती एनीबेसेन्ट (1847–1933)ने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिये अनवरत प्रयास किये और स्त्रियों की समस्याओं

के प्रति जन साधारण में चेतना जाग्रत की।

महात्मा गांधी द्वारा महिलाओं में जागरूकता के प्रयास :–

राजा राम मोहन राय के बाद स्त्री सुधार की दशा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति महात्मा गांधी ही थे। उनका कहना था कि स्त्रियाँ किसी भी दृष्टि से पुरूषों से हीन नही होती उन्हे कमजोर कहना उनके प्रति अन्याय और अपमान ही है। वे स्त्रियों को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल करने के पक्षधर थे। गांधी जी के संदेश ने स्त्रियों को अतीत की सारी कुठाओं, तनावों तथा बंधानों को तोड़कर आगे बढने का अवसर दिया। 12 मार्च 1930 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत 19 आश्रमवासियों के साथ प्रसिद्व दाण्डी यात्रा में सरोजनी नायडू के नेतृत्व में 25000 स्त्रियों ने उस समूह में मिलकर गांधी जी की शक्ति को बल दिया। अक्टूबर 1940 में व्यक्तिगत नागरिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन जोकि 14 महीने तक चला, में लगभग 20 हजार लोगों की गिरफतारी हुई जिसमें अधिकांश

स्त्रियाँ थी।

श्रीमती सरोजनी नायडू को भारत की प्रथम महिला राज्यपाल व प्रथम महिला कांग्रेस अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त है। गांधी युगीन महिलाओं में कमला देवी चट्टोपाध्याय, अरूणा, आसिफअली, प्रकाशवती सूद (मेरठ), सज्जन देवी महनौत(वाराणसी), सवित्री श्याम(बरेली),शन्तिदेवी अग्रवाल(लखनऊ) श्रीमती सुचेता कृपलानी (वनारस, इलाहाबाद), तारा अग्रवाल (कानपुर) ब्रजरानी मिश्रा (विदुर), प्रभा दीक्षित (कानपुर) लक्ष्मीदेवी (फैजाबाद), पूर्णिमा बनर्जी (इलाहाबाद), चन्दावती लखनपाल (सहारनपुर) आदि के नाम प्रसिद्व है। इनके अतिरिक्त अनेक अनाम प्रदेशीय स्त्रियों ने अपने जीवन के स्वर्णिम वर्ष राष्ट्रीय आन्दोलन यज्ञ में होम कर दिये। वास्तव में भारत में नारी जागरण में गांधी जी की देन अपूर्व थी।

नेहरू परिवार की महिलाओं का राष्ट्रीय आन्दोलन व राजनीति में विशेष योगदान रहा है। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित, श्रीमती उमा नेहक के योगदान को कभी भुलाया नही जा सकता। पण्डित मोती लाल नेहरू की पुत्री विजयलक्ष्मी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त उन्होने कस में राजदूत (1947–49), संयुक्त राज्य अमेरिका तथा मैक्सिको में राजदूत(1949–52), संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्यक्षता (1953–54), महाराष्ट्र की राज्यपाल(1961–64) आदि पदों पर कार्य किया। पण्डित मोतीलाल नेहरू की पत्नी स्वरूपा रानी नेहरू ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सकिय भाग लिया। पण्डित जवाहर लाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने को पूर्णत: समर्पित कर दिया। पण्डित मोतीलाल नेहरू की छोटी पुत्री कृष्णा नेहरू, पण्डित मोतीलाल के बडे भाई की पुत्रवधू रामेश्वरी नेहरू व जवाहर लाल के चचेरे भाई श्यामलाल नेहरू की पत्नी ने नमक कानून तोडा और सरकार विरोधी भाषण दिये और विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने धरना दिया।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा इसके बाद देश की राजनीति में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली, नेहरू के बाद सबसे अधिक सशक्त प्रधानमंत्री, दुर्गा आदि नामों से विभूषित महिल श्रीमती इन्दिरा गांधी अदम्य इक्षा, दृढ संकल्प, राजनीतिक तथा प्रशासनिक सूझबूझ की धनी रही। उन्हे वर्ष 1971 में 'भारत रत्न' तथा 1984 में जवाहर नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती गांधी के चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके अन्य सहयोगियों के साथ उत्तर प्रदेश की श्रीमती मोहसिना किदवई, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, उमा तिवारी, सुखदा मिश्रा, रानीइन्दुमोहिनी, सुशीला रोहतत्री, बेगम इसरफ इमाम, प्रेमवती तिवारी, शीला कौल, पद्मासेठ, स्वरूप कुमारी बख्सी आदि ने उनका पूर्ण साथ दिया। उत्तर प्रदेश की राजनीति में श्रीमती सुचेता कृपलानी का नाम नही भुलाया जा सकता । भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में वे गांधी जी के साथ जुडी रही। 2 अक्टूबर 1663 को वे उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनी और उन्होने प्रदेश के समुचित विकास की ओर ध्यान दिया।

इस प्रकार भारतीय समाज में नारी के स्थान के सम्बन्ध में उतार–चढाव आते रहे है।

आधुनिक समाज में नारी की स्थिति :–

आधुनिक समाज में स्त्रियाँ गुलामी से मुक्त है। वे पुरूषों के समकक्ष स्थान प्राप्त कर रही है। अध्यापक व प्रवक्ता के रूप में वे विधार्थियों को प्रगति के पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित करती है। डॉ0 व नर्सो के रूप में वे समाज की सेवा करती है, पुलिस अधिकारी, व कर्मचारी के रूप में वे आन्तरिक सुरक्षा का दायित्व लिये है। उन्होने राजनीतिज्ञ, प्रशासन, न्यायाधीश, वकील, कवि एवं समाज– सेवी के रूप में अपनी योग्यता सिद्व कर दी है। आज नारी ने भारत का सर्वोच्च पद भी प्राप्त कर लिया है। भारत के राष्ट्रपति पद पर महिला आसीन रह चुकी है।

कई राज्यों की मुख्यमंत्री भी महिलाये रह चुकी है इस प्रकार आधुनिक भारत में नारी अपने गरिमामय पद को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील है और वे किसी भी क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा कर रही है। वे आत्मविश्वास से भरी है और आत्मनिर्भर होने के लिये उत्सुक है। आधुनिक समाज में श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल, लता मंगेशकर, पी. टी. ऊषा, सुस्मिता सेन, ऐश्वर्या राय, किरन वेदी, कल्पना चावला, बछेन्द्री पाल, एन. सी. मेरी कॉम, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, ऊरूंधती राय, चंदा कोचर, संतोष यादव, नर्मता राव, सुषमा स्वराज, सोनिया गांधी, ममता बनर्जी, मायावती, वसुंधरा राजे और मीरा कुमारी जैसी महिलाओं ने पुरूष प्रधान क्षेत्र में बराबर की भागीदारी निभाई है।

इस सन्दर्भ में युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है – '' किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं का स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिये, जहाँ से वे अपनी समस्याओं को अपने दम से स्वयं सुलझा सके। हमे नारी शक्ति से उद्वावक नही, वरन उनके सेवक और सहायक बनना चाहिये। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किसी भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है उन्हे उपयुक्त अवसर देने की । इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाएँ सन्निहित है।

प्लास्टिक से बिगड़ता पर्यावरण

डॉ सर्वेश कुमार सिंह
अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान

बढ़ती आबादी और उसी अनुपात में बढ़तें गंदगी के ढ़ेर, पालीथीन से मरते निरीह पशु और अवरूद्ध नाले अपने उफान को चारो ओर फैलते हुए किसी को भी विक्षित बनाने के लिए काफी है। आज देश विदेशों में दूषित पर्यावारण का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। इस दूषित पर्यावरण का एक मुख्य कारण प्लास्टिक का आविष्कार भी है जो हमारे घर के अन्दर तक चुपके से पहुचे गया है।

आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि जिस प्लास्टिक में खाने–पीने का सामान ला रहें है उसके साथ एक ऐसा जहर भी घर में ला रहे है, जो धीरे–धीरे विष फैला रहा है।

आज बहुत से लोग जब बाजार जाते है तो साथ में थैला या झोला ले जाना भूलते जा रहे और प्लास्टिक से बनी थैलियों में सामान भर कर लातें है। आज ज्यादातर सामान खुद ही प्लास्टिक से बनी पैकिंग में होता है उसी प्लास्टिक को इधर उधर फेंक दिया जाता है। यह अत्यन्त जहरीला होता है। इसमें पारा, कैडमियम, विनाइल क्योराइड व कई धातुयें व रसायन आदि तत्त्व होते है। प्लास्टिक नष्ट करने का कोई सुरक्षित उपाय नहीं हैं कूड़ा स्थलो एवं गड़ढो आदि स्थानो पर फेंके जाने पर इसमें से जहरीले रसायन का रिसाव होता है जिससे मिट्टी व जल प्रदूषित होते है।

प्लास्टिक को भट्ठियों पर जलाने से इससे और भी विषैली गैसे निकलती है। प्लास्टिक को रिंसाइकल करना और भी हानिकारक होता है। अगर सही रूप से रि–साइकल नहीं होता है तो वायु और मिट्टी भी जहरीली हो जाती है। प्लास्टिक को रंगने वाला रंग और भी हानिकारक होता है। प्लास्टिक जल निकास को भी बन्द कर देती है इसी लिए बरसात के मौसम में जल भराव की समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। यह घरो, सार्वजनिक स्थलों, बाग–बगीचों, नालियों को प्रदूषित करती है। हल्की होने के कारण इसके थैले एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़ कर बिखर जाते है। इससे पर्यावरण को नुकसान पहुचाने के साथ –साथ पशुओं द्वारा अज्ञानतावस थैलियो के निगल जाने से उनके मर जाने व जानलेवा बीमारियों से ग्रसित होने के तथ्य रोजाना समाचार पत्रों में प्रकाशित होते आ रहे है। कस्बो, शहरों एवं महानगरों के नाले अवरूद्ध होने के सबसे बड़े कारणों में प्लास्टिक भी है। अपनी गुणवत्ता के कारण प्लास्टिक ने हमारी जिन्दगी में जो जगह बनायी है उसे बदलना लगभग नामुमकिन है। इसके दुष्परिणाम से आज सभी लोग परिचित हो चुके हैं लेकिन इसकी सेवा से लोग बंचित भी नहीं रहना चाहते है। अगर यही हाल रहा तो हमारे पर्यावरण के लिए प्लास्टिक एक गंभीर खतरा बन जायेगा।

अत: अब लोगो को यह महसूस करना होगा कि इधर–उधर फेंके गये प्लास्टिक हमेशा के लिए बने रहेंगे और धीरे–धीरे यह हमारी पृथ्वी को अवरूद्ध कर देंगे। अपने पर्यावरण को बचाने का एक ही तरीका है कि इनके उपयोग व पूर्ण उपयोग को कम करने के लिए तुरन्त प्रयास शुरू करने होगे यह तभी संभव होगा जबकि हर व्यक्ति, पूरा समाज इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायंगा।

जब तक प्लास्टिक का कोई विकल्प नहीं खोज लेते तब तक हमको इन बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए।

1) प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये।

2) प्लास्टिक का कम से कम इस्तेंमाल करना चाहिए।

3) रि–साइकल करके इस्तेमाल करना चाहिए।

यह बहुत मुस्किल काम नहीं है, जरूरत है बस प्रयास की, एक भावना की, एक साथ मिलकर कदम बढ़ाने की। आप भी ऐसा ही करे और अपने सम्पर्क में आने वाले परिवारो को भी उत्साहित करें। हम सबको साफ वातावरण में रहने का अधिकार है।

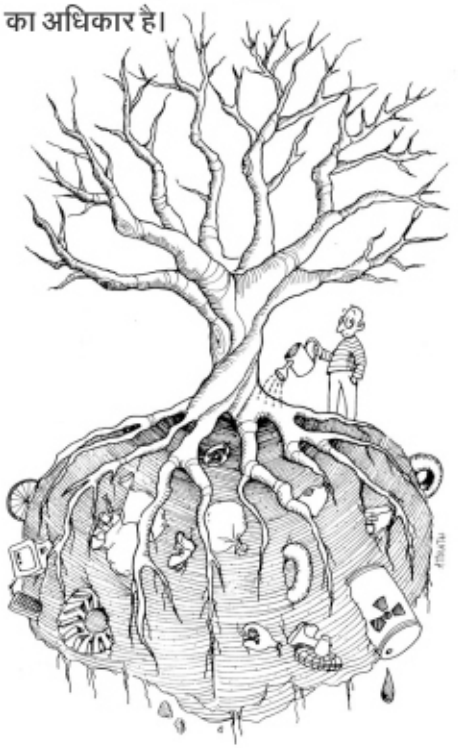

सावधानी में ही समझदारी

सत्येन्द्र प्रसाद
वाणिज्य प्रवक्ता

एक पेट्रोल पम्प पर एक महिला अपनी कार में पेट्रोल भरवा रही थी। उसी समय एक व्यक्ति ने अपने को पेंटर बताते हुए परिचय दिया तथा अपना विजिटिंग कार्ड उस महिला को दिया और कहा कि कभी आवश्यकता हो तो बुला सकती है।

उस महिला ने बिना कुछ सोचे वो कार्ड पकड़ लिया तथा अपनी कार में बैठ गई। वह आदमी भी एक दूसरी कार में बैठ गया जो कि कोई और व्यक्ति चला रहा था। जैसे ही वह महिला पेट्रोल पम्प से चली उसने देखा कि वह आदमी भी उसी समय उसके पीछे पेट्रोल पम्प से निकला। थोड़ी देर बाद महिला को चक्कर से आने लगे और साँस लेने में तकलीफ होने लगी। उसे कुछ गंध सी आने लगी तो उसने कार की खिड़की खोलने की कोशिश की तब उसे ये अहसास हुआ की वह गंध उसके हाथ में से ही आ रही है, जिस हाथ से उसने वो कार्ड पकड़ा था। तो उसने नोटिस किया कि वह आदमी अपनी कार में उसके पीछे था। तो उसने सोचा कि उसको कुछ करना चाहिए तो उसने सर्विस लेन में अपनी कार ले जाकर रोकी और हॉर्न को जोर जोर से बजाना शुरू कर दिया जिससे रास्ते से गुजरने वाली राहगीर उसकी गाड़ी के पास आने लगो यह देखकर जो कार महिला के पीछे लगी थी वह वहां से चली गई उसके बाद उस महिला को अपने आप को होश में आने का वक्त मिल गया।

इस घटना का जिक करने की वजह है आपको एक ड्रग Burundanga कहलाती है के असर से परिचित कराना। ये ड्रग किसी को कुछ समय के लिए बेसुध कर सकती है तथा उस व्यक्ति से कीमती सामान चुराया जा सकता है। ये ड्रग किसी कार्ड पर भी लगाई जा सकती है।

अत: आप सब कभी भी अनजान व्यक्ति से कोई कार्ड न ले विशेषत: जब आपके पास नकदी या बहुमूल्य वस्तु हो। साथ ही साथ सभी महिला परिजनों को इस ड्रग के बारे में बताए तथा उन्हें भी किसी अपरिचित व्यक्ति से जब वह अकेली हो, कार्ड न लेने की सलाह दे।

उन महिलाओं को अवश्य सावधान करें जो गृहणी हो और घर पर अकेली रहती हो और दिन भर में कई घर पर आने वाले सेल्समैन से मिलती है वो भी उनके दिये हुए किसी कार्ड को सावधानी बरतते हुए न ले।

ऐसी घटना कही भी हो सकती है। सावधानी में ही समझदारी है।

स्नेह से सनी सात्विक रोटियाँ

शशिकान्त मिश्र
सहायक प्रोफेसार
बी0एड0 विभाग

शिकागो धर्म सभा से लौटने के बाद स्वामी विवेकानन्द जी भक्तो के आग्रह पर अलवर में पधारे थे। इस बार स्वामी जी विश्व विख्यात थे एक दिन एक धनाढय भक्त स्वामी जी से आग्रह कर रहा था, स्वामी जी मुझ गरीब के घर प्रसाद ग्रहण करने की कृपा करें। धनाढ़य व्यक्ति द्वारा अपने को गरीब कहना विनीत भव कम, शब्दालंकार ही अधिक होता है। यह एक प्रकार का अहंकार या वर्तमान से अधिक वैभप प्राप्त करने की अतृप्त लालसा की अभिव्यक्ति जैसा लगता है। लोग इसे विनम्रता सा व्यवहार कुशलता कहते हैं।

स्वामी जी कानो से धनाढ़य भक्त का आग्रह सुन रहे थे, परन्तु उनकी दृष्टि दरवाजे पर खड़ी वृद्ध माँ पर जमी थी। उसे देखते ही पूर्व यात्रा का स्मरण हो आया, जब बाकी लोगो का स्वामी जी का प्रवचन सुनने से पेट नहीं भरता था, पर स्वामी जी की पेट की पीड़ा को उस माँ ने समझ कर उन्हे अपने ही हाथों से बनी मोटी रोटी का भोग लगाया था।

किन्तु नगर के धनाढ़य व्यक्ति को भोजन का निमंत्रण देते देख वद्ध माँ चुप रह गई।। उसे लगा कि वह किस मुह से निमंत्रण दे। उसका निमंत्रण कौन स्वीकारेगा? वह बिना बोले लौटने लगी कि स्वामी जी ने उसे रोककर आने का कारण पूछा। उसने संकोचवश भोजन की बात न कहकर, दर्शन करने आयी थी, ऐसा उत्तर दिया स्वामी जी तो मन के पारखी थे, वे अर्न्तमन की बात समझ गये, उन्होने सहज कहा, माँ क्या इस बार रोटी नहीं दोगी? फिर उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना बोले, कल हम भोजन करने आ रहे हैं, खिलाओगी न? इस अप्रत्याशित सी लगने वाली बात से भक्त चकित आंखो से अश्रुधारा बहने लगी। अवरूद्ध कंठ से बस इतना ही कह पाई, अहो भाग्य। तय समय के अनुसार शिष्यो समेत स्वामी जी भोजन–प्रसाद के लिए पधारे। भोजन परोसते समय अत्यन्त संकोच से मां बोली मेरी तो इच्छा होती है कि संसार के समस्त सात्विक व्यंजन तुम्हें परोसूं, परन्तु मै गरीब हूँ, कहाँ से लाऊं? जो भी रूखा सूखा है, उसी को तुलसी दल सा ग्रहण करें, ऐसी प्रार्थना है।

कथनी और प्रस्तुति में दुराव नहीं था। जैसा कहा, वैसा ही अक्षरशः भोजन था स्वामी के सान्निध्य से यह स्नेह भोज महाप्रसादी बन गया। स्वामी जी ने शिष्यो को सम्बोधित करते हुए कहा ''देखते हो न वृद्धा माँ का कितना स्नेह है और उसके हाथो से बनी ये रोटियाँ कितनी सात्विक हैं।

उस घर की प्रत्येक वस्तु अपने आप में निर्धनता की महागाथा थी। इससे स्वामी जी करूणार्द्र हो गये। चलते समय चुपके से अत्यन्त विरोध के उपरान्त भी, सौ रूपये गहस्वामी को देकर स्वामी जी ने वहां से प्रस्थान किया।

सीख : महानता प्रेम का अनुसरण करती है, धन या वैभव का नहीं।

''आधुनिक युग में शिक्षक की परिवर्तित भूमिका''

प्रतिमा मिश्रा
विभागध्याक्षा

'' किसी भी देश का आने वाला कल इस बात पर निर्भर करता है कि उस कल की दिशा देने वाले कौन है? विनोबा भावे

निश्चित ही उत्तर यही होगा मार्ग दर्शन करने वाले योग्य शिक्षक क्योंकि शिक्षक अपने ज्ञान और अनुभव से आम इंसान को खास बनाते हैं शिक्षक के बिना सभ्य और शिक्षित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षक की भूमिका का चुनौतीपूर्ण थी और आज भी है। उसे शिक्षक के साथ –साथ माता–पिता, मार्गदर्शक, सहायक मित्र तथा परामर्शदाता होना चाहिये। वर्तमान में शिक्षा के व्यवसायीकरण तथा व्यर्थ की प्रतिस्पर्धा (जिसे हम ईर्ष्या भी कह सकते है), ने शिक्षक के व्यक्तित्व की परिभाषा को सीमित कर दिया है। शिक्षक या गुरू शब्द सुनते ही हमारे मस्तिष्क में छवि बनती है उन शिक्षकों की, जिनसे हमने स्कूल या कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की न कि वह प्रत्येक व्यक्ति जो हमें किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ सिखाता है।

युग बदला, समय बदला, शिक्षण पद्धतियाँ बदली, शिक्षक बदले परन्तु विद्या से ज्ञान के आदान प्रदान में शिक्षक के महत्व में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शिक्षक वहहै जिसकी सहायता से हम किताबी आर्दशो का तारतम्य जीवन की सच्चाइयों से स्थापित कर पाते है विचारो को एक रचनात्क केन्द्र देते हैं, सही गलत में, भेद कर पाते है और सबसे अहम् राष्ट्र निमार्ण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे पाते है।

आज शिक्षको की भूमिका कई प्रकार से पहले से अलग है। बदलते सामाजिक, आर्थिक समीकरण, तकनीक तथा व्यापक सोच के बीच शिक्षकों की भूमिका भी व्यापक हुयी है।

आधुनिक युग में केवल कोर्स या पाठयक्रम के अनुरूप पढ़ाना भर ही उनकी जिम्मेदारी नहीं रह गई है बल्कि परीक्षा के तनावग्रस्त माहौल से लेकर छात्रों की व्यवसायगत काउंसालिंग तक, माता पिता व छात्र के परस्पर सबन्धों से बेहतर सामंजस्य से परिचित कराना भी एक अच्छे शिक्षक का कर्त्तव्य है। तनाव ग्रस्त माहौल, सामाजिक संबंधो में असंमांजस्य ऐसी परिस्थितियां है, जो शिक्षक के छात्र से तथा छात्र को शिक्षक से असुरक्षा की भावना के कारण उत्पन्न हुई है, ऐसे में यदि संयमित तथा अनुशासित होकर शिक्षक अपने कार्य तथा सकारात्मक भूमिका को सिद्ध करने में सफल होता है, तो ऐसे में छात्र के भविष्य तथा देश के भविष्य को सही आकार मिलना निश्चित है। आधुनिक युग का शिक्षक क्या ऐसा है?

1. शिक्षक परामर्श दाता के रूप में :

5 वर्ष की आयु से शिक्षक औपचारिक रूप से पाठशाला में शिक्षण प्रारम्भ करता है तथा बालक को घर से निकाल कर बाहर के वातारण से परिचित करता है। 5–10 वर्ष की अवस्था में पढ़ाई के साथ –साथ जीवन के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराने में भी शिक्षक छात्र की सहायता करता है, 10–15 वर्ष की अवस्था '' परिवर्तन की स्थिति'' है, जिसमें शिक्षक द्वारा की गई एक गलती या अच्छी सलाह छात्र के लिये अभिशाप या वरदान बनती है। 15–20 वर्ष की अवस्था कैरियर की दहलीज पर छात्र का पहला कदम है जिसे एक सवेदनशील शिक्षक ही कामयाब बना सकता है, 20 वर्ष के बाद छात्र को अपने निर्णयों पर कामयाबी की तस्वीर साफ दिखने लगती है, जिसमें कई संस्थाओं तथा संस्थानों के शिक्षको के परामर्शो का वह स्वयं अवलोकन करता है कि किस शिक्षक ने कैसे अंजाम तक पहुँचाने में मदद की।

2. शिक्षक समन्वयक के रूप में :

वर्तमान में सामाजिक स्थितियां इतनी भयावह है कि प्रत्येक सम्बन्ध असुरक्षा के दायरे में जी रहा है। शिक्षक जिसे हम माता–पिता के रूप में भी देखते है, हमें सभी संबंधो के साथ सामंजस्य सथापित करना सिखाता है, यदि नहीं तो ये संवेदनहीनता का घोतक है तथा सामाजिक भूले तथा नैतिकता के पतन का कारण भी यही है। इसलिये शिक्षक रूपी 'कुम्हार' छात्र रूपी 'मिट्टी' को सही आकार देन वाला होता है।, माता–पिता से बढती दूरियां, संवेदनाओं के प्रति शून्यता को भरने में शिक्षक की प्रमुख भूमिका है।

3. शिक्षक दिग्दर्शक और मार्गदर्शक :

महात्मा गाँधी के अनुसार– ''ऐसी आधुनिक शिक्षा जिससे हमारे संस्कारों, संस्कृति तथा कर्तव्यों का बोध न रहे तो इससे अच्छा है हम पुरानी परंपराओं में जकड़े रहें'' इसका अर्थ यही है यदि पुराने संस्कारो की दुहाई देते हुये शिक्षक भटकते हुये छात्र को सही मार्ग दिखाता है तो वह एक छात्र ही नहीं बल्कि उससे जुड़ी हर परिस्थिति तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ साथ समाज के लिये भी अपना दायित्व निभाता है। आज आवश्यकता ऐसे ही शिक्षक की है।

4. शिक्षक एक मित्र के रूप में :

हम सभी सच्चे मित्र की परिभाषा से भलीभांति परिचित है, परन्तु भविष्य के परिणामों से अंजान आज की पीढ़ी जो संवेगों–सेवेदनाओं तथा मानवीय मूल्यों से अपरिचित है, उसे अपने सबसे निकट शिक्षक रूपी मित्र और वह भी सच्चे मित्र की आवश्यकता होती है।

5. शिक्षक एक रोल मॉडल के रूप में :

जन्म से जीवन पर्यन्त छात्र किसी न किसी को आदर्श रूप में मानता है वह शिक्षक के रूप में अपने माता–पिता शिक्षको या इसके अतिरिक्त कोई ऐसा व्यक्ति जो उसे नकारात्मक या सकारात्मक रूप में प्रभावित करता है। यह प्रभाव छात्र में जीवन पर्यन्त दिखाई देता है, इसलिये शिक्षक को ज्ञान के साथ साथ नैतिक चरित्र वाला विभिन्न योग्यताओं से पूर्ण होना चाहिये जो उसकी उपयोगिता को प्रभाणित करता रहे। डा0 राधाकृष्नन के अनुसार ''शिक्षक वह नहीं है जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को ठूसे, बल्कि शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिये तैयार करें।''

आज विज्ञान ने तरक्की के प्रत्यके क्षेत्र बदले है, इन दिनों Distant Learning, On Line Education, Modern Educational Gadgetd, Adsets Vertual Classes जैसी तकनीक ने शिक्षक के Work Profile को Redefine किया है, इसलिए आज शिक्षक का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो गया है। Sam petroda के अनुसार '' शिक्षक वही कायमाब होगा जो तकनीको के माध्यम से स्वयं को व्यक्त करने में माहिर होगा। इसलिये मानवीय मूल्यों, नैतिक कर्तव्य निर्वाह करने की क्षमता के साथ –साथ उसकी जरूरी योग्यता तथा Techno worker होना आवश्यक है।''

इस सत्य को हम नकार नहीं सकते कि अपने प्रत्येक अनुभवों के द्वारा उम्र के तीखे मोड़ों में बदलाव के धुंधलकों से छात्र को सही राह दिखाने में शिक्षक की भूमिका आज भी महत्वपूर्ण है और भविष्य में रहेगी।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

डॉ. इरम दिवा
वनस्पति विभाग

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
अगर करना हो कोई कार्य तुम्हे
तो हार कभी न मानना
मन की शक्ति विजय का आधार,
यह बात मेरी तुम सदैव लो गीरेह बाँध,
राम व सिया को करना था जब वन में वास,
परिस्थिति थी विषम, पर कभी न हुए वे हताश
मन में धारण रखा सदैव यह विशवास
साहस का जीवन में रखा सदैव आवास,
कौरवो ने सदैव छल और बल अपनाया,
फिर भी पांडवो ने धर्म के मार्ग पर चलकर विजय का
परचम लहराया
अतं में हुई विजय साहस की, पराजित हुआ छल और
भय यहीं होता सदैव हर कहानी का अंतिम, चरण
हर अंधियारी रात्रि के पश्चात सूर्यादय होता स्वार्णिमय!
सत्य, चरित्र, कर्म रखें अटल अपने चिंत में,
कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

कृषिगत आधारभूत अवसंरचना

डा0 सतीश चन्द्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभाग अध्यक्ष
प्राणी विज्ञान

ग्रामीण क्षेत्र की आबादी का बड़ा हिस्सा अर्थोपार्जन के लिए कृषि अथवा कृषि संबंधित उपागम पर आश्रित है। कृषि को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात् सभी सरकारों ने कृषि संबंधी सुधार के अनेक प्रयास किए है। हरितक्रंति के परिणामस्वरूप देश अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर तो बन गया लेकिन बढ़ती जनसंख्या और कमरतोड़ महंगाई के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति में कुछ खास सुधार नहीं हो सका। किसानों द्वारा खेती का लागत मूल्य निकाल पाना चुनौतीपूर्ण है। प्रधानमंत्री 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के लिए कृषि क्षेत्र में आधारभूत संरचना के विकास पर बल दे रहे हैं। वर्तमान वित्तीय वर्ष में सरकार ने किसानों को लागत मूल्य की डेढ़ गुना कीमत प्रदान करने के लिए खरीफ की फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में भारी वृद्धि कर दी है। वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के बावजूद देश में बड़े पैमाने पर 50 फीसदी कृषि प्रणाली मानसून (भगवान) के भरोसे है। जिस वर्ष प्रकृति साथ देती है, उस वर्ष तो देश में बड़े पैमाने पर खाद्यान्न उत्पादन होता है। परंतु प्रकृति के कुपित होने की स्थिति में खाने के भी लाले पड़ जाते है। इसी कारण देश की कृषि अर्थव्यवस्था को मानसून आधारित जुआ कहा जाता है। कर्ज तले दबा किसान अगली फसल के लिए फिर से कर्ज लेने को मजबूर हो जाता है। विगत वर्षो में कर्ज के जाल में उलझे अनेक किसानों ने कर्ज से मुक्ति प्राप्त करने के लिए स्वयं मौत का आलिंगन कर लिया। प्राकृतिक निर्भरता को कम करने और किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए कृषि क्षेत्र में आधारभूत अवसंरचना के विकास पर जोर दिया जा रहा है। किसानों को आधुनिक कृषि संयंत्र खरीदने एवं अन्य कृषि जरूरतों की पूर्ति हेतु सस्ती दर पर पर्याप्त मात्रा में कृषि ऋण की व्यवस्था की गई है। खाद्यान्नों के संरक्षण हेतु ब्लॉक स्तर पर गोदामों का निर्माण कराया जा रहा है। इसी तरह फल व सब्जियों को संरक्षित करने हेतु शीतगृह एवं शीतश्रृखंला का निर्माण किया जा रहा है। किसानों को उपज का सही मूल्य दिलाने और बिचौलियों की भूमिका को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई.नाम) और ग्रामीण कृषि बाजार की स्थापना की गई है। साथ ही, किसानों की आमदनी में वृद्धि करने के लिए खेती को उद्यम के रूप में विकसित किया जा रहा है स्थानी स्तर पर किसानों को कृषिगत रोजगार मुहैया कराने और फसल उत्पादों के मूल्य संवर्धन के लिए खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए देशभर में 42 मेगा फूड पार्को की

स्थापना की जा रही है। ग्रामीण स्तर पर स्वयं सहायक समूहों के माध्यम से आर्थिक स्वावलंबन हेतु बैकों से अनुदान व ऋण सहायता का प्रबन्ध किया गया है। कृषि उत्पाद आधारित लधु एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना एवं सफल क्रियान्वयन हेतु आर्थिक अनुदान व सहायता की व्यवस्था की गई है।

सिंचाई संसाधनों का विकास

देश की भौगोलिक व प्राकृतिक विविधता के कारण कुछ क्षेत्रों में तो सिंचाई के पर्यात साधन है, जबकि कुछ क्षेत्रों में पीने के पानी का भी अकाल है। अच्छी पैदावार के लिए समय से पर्याप्त मात्रा में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। फसल की प्रकृति के अनुरूप कम या अधिक पानी की जरूरत पड़ती है। इसी कारण भौगोलिक संरचना एवं उपलब्ध सिंचाई संसाधनों के आधार पर देश के विभिन्न भागों में फसल उत्पादन में विविधता पाई जाती है। देश की कुल कृषि योग्य भूमि का 48 प्रतिशत भू–भाग सिंचित है। जल संसाधनों की उपलब्धता दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। देश की बढ़ती आबादी की खाद्य और पेय संबंधी जरूरतों की पूर्ति के लिए निकट भविष्य में बहुत बड़े पैमाने पर जल की आवश्यकता पड़ने वाली है।

जल परिवहन में दक्षता–सिंचाई के दौरान परिवहन में बड़े पैमाने पर जल बर्बाद हो जाता है। आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल

कर जल परिवहन में जल की बर्बादी को कम किया जा सकता है।

जल उपयोग में दक्षता–प्रति बूंद जल का अधिकतम उपयोग सिंचाई का 30–40 प्रतिशत जल वाष्पीकृत होकर उड़ जाता है। आधुनिक पद्धति का उपयोग कर सिंचाई के संपूर्ण जल का उपयोग फसल पैदावर के लिए कियाा जा सकता है।

जल संरक्षण–वर्षा के जल को नष्ट होने से बचाने के लिए तथा भविष्य में उसका पुन–उपयोग करने के लिए जल संरक्षण पर बल दिया जा रहा है। इसके लिए सरकार द्वारा वाटरशेड जैसी महत्वकांक्षी परियोजना का कियान्वयन किया जा रहा है। स्थानीय स्तर पर भी गढ्ढे और तालाब खोदकर जल एकत्रण का प्रयास किया जा रहा है।

जल वितरण दक्षता–सिंचाई जल का एक समान वितरण किया जाना चाहिए। जल का जितना समान वितरण होगा, फसल की पैदावार उतनी ही अच्छी होगी। इस योजन में तीन मंत्रालय जल संसाधन मंत्रालय, नदी विकास एवं गंगा पुनरूद्धार मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय समेकित रूप से कृषि मंत्रालय का सहयोग कर रहे है। सूखा प्रभावित इलाकों में जल संरक्षण और बांध आधारित बड़ी परियोजनाओं के सहयोग से स्थानीय जरूरतों के मुताबिक जिला स्तरीय परियोजना के द्वारा सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। आधुनिक तकनीक का उपयोग कर प्रति बूंद अधिक फसल उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। जल बचत और सटीक सिंचाई प्रणाली द्वारा पानी के उपयोग की दक्षता में सुधार किया जा रहा है। देश के प्रत्येक खेत में सिंचाई सुविधाओं के लिए जल संरक्षण और अपव्यय को कम करने पर बल दिया जा रहा है।

शीत एवं भडारगृहों की स्थापना

देश में रिकॉर्ड फसल उत्पादन के पश्चात् उत्पाद को सुरक्षित रखना सर्वाधिक चुनौनीपूर्ण है। गैर–सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में प्रतिवर्ष 670 लाख टन खाद्यन्न नष्ट हो जाते है। भारत सरकार के 'सेंट्रल इंस्टीटयूट ऑफ पोस्ट हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के अध्ययन के अनुसार, उचित भंडारण की कमी के कारण देश में बड़े पैमाने पर खाद्य पदार्थो की बर्बादी होती है जिससे लाखों लोगों की भोजन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। खाद्य पदार्थो की बर्बादी के कारणा देश में भुखमरी और मंहगाई में बढ़ोतरी हो रही है। भंडारण की समुचित व्यवस्था से खाद्यान्न संरक्षण द्वारा किसानों को फसल की समुचित कीमत मिलने के साथ–साथ उपभोक्ता को सस्ते दर पर खाद्य पदार्थ मुहैया हो सकता है। कृषि मंत्री स्वयं स्वीकाते हैं कि देश में बड़े पैमाने पर प्याज, टमाटर, आलू इत्यादि खेत से उपभोक्ता तक पहुंचने से पूर्व ही नष्ट हो जाते है।

कृषि बाजार तंत्र

किसानों के समक्ष खाद्यान्न उत्पादन से बड़ी चुनौती कृषि उत्पाद को बेचकर उचित मूल्य प्राप्त करना है। बाजार–तंत्र पर सेठ,साहूकार और बिचौलियों का कब्जा होने के कारण किसान कृषि उत्पाद औने–पौने दाम पर बेचने को मजबूर होता है। वैसे भी जब फसल तैयार होती है, तो मांग की तुलना में आपूर्ति की अधिकता के कारण फसल उत्पाद की कीमत बहुत कम हो जाती है। जहां बिचौलिये मोटा मुनाफा कमाने के लिए कृषि उत्पाद को कुछ समय तक रोक लेते है या देश के अन्य भागों में बेचते है। वहीं किसान सालभर हाड–तोड़ मेहनत और प्राकृतिक चुनौतियों से जूझते हुए फसल उत्पादन के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देता है। इसके बावजूद उसे फसल की समुचित कीमत नहीं प्राप्त होती है। यद्यपि सरकार किसानों को फसल के न्यूनतम मूल्य गारंटी देने के लिए प्रतिवर्ष न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है और बड़े पैमाने पर खाद्यान्न की खरीदारी करती है, लेकिन इसके बावजूद कृषि उत्पाद के उपभोक्ता मूल्य और किसानों

को प्राप्त कीमत में भारी अंतर होता है।

केंन्द्र सरकार कृषि विपणन प्रणाली में सुधार करते हुए किसानों को राष्ट्रीय स्तर पर फसल बेचने के लिए राष्ट्रीय कृषि बाजार ई–नाम प्रणाली एवं स्थानीय स्तर पर ग्रामीण कृषि बाजार की स्थापना कर रही है ई–नाम एक पैन इंडिया इलेक्ट्रॉनिक व्यापार पोर्टल है जो कृषि संबंधी उपजों के लिए एकीकृत राष्ट्रीय बाजार का निर्माण करने के लिए मौजूदा एपीएमसी मंडी का विस्तार है। यह पोर्टल समस्त एपीएमसी से संबंधित सूचनाओं व सेवाओं को एक स्थान पर प्रदान कराता है। अखिल भारतीय ऑनलाइन व्यापार मंच द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत विपणन व्यवस्था लागू होने से उपभोक्ता और किसान के मध्य ऑनलाइन सूचनाओं का संवाद स्थापित हो सकेगा जिससे राष्ट्रीय स्त्र पर मांग व आपूर्ति के आधार पर खाद्य पदार्थो की कीमतों का निर्धारण हो सकेगा। किसानों की पहुंच राष्ट्रीय बाजार व्यवस्था तक हो सकेगी। किसानों को खाद्य उत्पाद की गुणवत्ता के मुताबिकक समुचित कीमत तथा उपभोक्ताओं को सस्ती दर पर बेहतरीन खाद्य उत्पाद प्राप्त हो सकेंगे।

राष्ट्रीय कृषि बाजार एक आभासी(अमूर्त) बाजार है पंरतु इसके पीछे भौतिक(मूर्त) बाजार एपीएमसी का अस्तित्व है। एपीएमसी से संबंधित समस्त जानकारियां और सूचनाएं ई–पोर्टल पर उपलब्ध है। ई–नाम योजना के अंतर्गत ई–मार्केट प्लेटफार्म की स्थापना की गई है। ई–नाम प्रणाली के कियान्वयन हेतु उत्पाद बाजार समितियों के कानूनों में संशोधन किया जा रहा है। ई–नाम के अंतर्गत एकल लाइसेंस प्रकिया शुरू की जा रही है जिससें किसान एकल व्यापार लाइसेंस द्वारा समूचे राज्य में करोबार कर सकता है। इसके अंतर्गत एक जिंस के थोक व्यापार के लिए एक ही स्थान पर बाजार शुल्क वसूलने की व्यवस्था की गई है। समस्त विपणन प्रणाली को पहले राज्य–स्तर पर फिर पोर्टल के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ा गया है।

खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन

किसान साल में 5–6 महीने तक तो कृषि कार्यो में व्यस्त रहता है जबकि शेष 6 से 7 महीने खाली रहता है। इस दौरान या तो वह महानगरों में जाकर मजदूरी करता है अथवा बेरोजगार रहता है। फलों और सब्जियों की प्रकृति शीघ्रता से विनष्टकारी होने के कारण बहुत जल्दी खराब हो जाते है। इसे लंबे समय तक संरक्षित रखने के लिए शीतगृह में रखा जाता है। देश में शीतगृहों का अभाव होने के कारण बड़े पैमाने पर फल व सब्जियां खराब हो जाती है। खाद्य प्रसंस्करण विधि द्वारा जहां एक ओर फल व सब्जियों के भौतिक व रासायनिक प्रकृति में परिवर्तन कर सामान्य तापक्रम पर लंबे समय तक

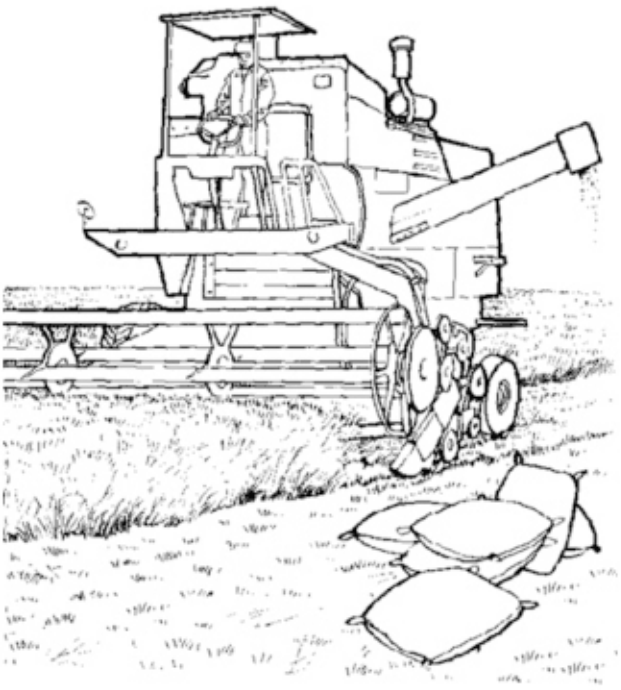

सुरक्षित रखा जा सकता है। वहीं दूसरी ओर किसानों को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकते है। मोदी सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण की महत्ता को देखते हुए देश में पहली बार खाद्य प्रसंस्करण मंलात्रय का गठन किया है। खाद्य प्रसंस्करण को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने बजट 22018–19 में खाद्य प्रसंस्करण कृषि मंत्रालय के लिए 1400 करोड़ रूपये आवंटित किए है। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावाा देने के लिए प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना आरंभ की गई है। कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सभी 42 मेगा फूड पार्क में अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा स्थापित की जा रही है। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में प्रतिवर्ष औसतन 8 प्रतिशत की दर से विकास हो रहा है। कृषि आय बढाने के लिए डेयरी, पशुपालन, मत्स्य, पोल्ट्री इत्यादि के विकास पर भी जोर दिया जा रहा है। किसान केडिट कार्ड की सुविधा का विस्तार मत्स्य एवं पशुपालन करने वालों तक कर दिया है। इसके लिए सरकार में प्रशिक्षण, सहायता और अनुदान देने की व्यवस्था की है। स्वयंसहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को ग्रामीण आजीविका कार्यकम के अंतर्गत स्वावलंबी बनाने के प्रयास किए जा रहे है। टमाटर, आलू और प्याज जैसी शीघ्र नष्ट होने वाली फसलों की कीमतों को अनिश्चितता से बचाने के लिए 'ऑपरेशन फलड' की ऑपरेशन ग्रीन योजना शुरू किया गया है। 'ऑपरेशन ग्रीन' के द्वारा किसानों,उत्पादक संगठनों, कृषि संभार तंत्र, प्रसंस्करण सुविधाओं, व्यवसाय प्रबंधन में सामंजस्य स्थापित किया जाएगा। इसके लिए 500 करोड़ रूपये की निधि की स्थापना की घोषणा की गई है।

मैं हूँ आज की नारी
आत्मविश्वास मेरी पहचान

उपमा सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाज शास्त्र, विभाग

आज की नारी का सफर चुनौतिभरा जरूर है, पर आज उसमें चुनौतियाँ से लडने का साहस आ गया है। अपने आत्मविश्वास के बल पर आज वह दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना रही है। आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है। परिवार व अपने करियर दोनों में तालमेल बैठाती नारी का कौशल वाकई काबिले तारीफ है। किसी को शिकायत का मौका नहीं देने वाली नारी आज अपनी काबिलीयत व साहस के बूते पर कामयाबी के मुकाम तक पहुँची है।

चुनौतियाँका हँसकर स्वागत करने वाली महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही है। कल तक भावनात्मक रूप से कमजोर महिलाएँ आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है तथा अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण फैसले स्वयं कर रही हैं।

मैं हूँ ना :–

शादी के पहले आत्मनिर्भर रहने वाली नारी के जीवन मैं शादी के बाद अचानक बदलाव–सा जाता है। अब उसके लिए अपना करियर व परिवार दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। इस वक्त यदि करियर कि बारक में गंभरता से नही सोचा तो भविष्य अंधकारमय हो सकता है और यदि परिवार की उपेक्षा की तो दांपत्य जीवन।

नारी को अपने कैरियर संबंधी किसी भी निर्णय को लेने से पहले बहुत सोचना–समझना पड़ता है। परिवार के प्रति उसके द्वारा थोड़ी–थोडी सी भी कोताही बरतने पर परिवार के सदस्यों की शिकायतें शुरू हो जाती है और उस पर कटाक्ष किये जाने लगते हैं।

ऐसे में परिवार और कार्यालय में स्वयं को बेहतर सिद्ध करने की वह हर सम्भव कोशिश करती है। और आदर्श बनकर सबका दिल जीत लेती है।

असुरक्षा की भावना :–

नारी के साथ असुरक्षा की भवना हर जगह होती है। महानगरों में आए दिन होती छेड़छाड, बलात्कार व हिंसा संबंधी घटनाऐं नारी को भयाक्रांत करने व अपने कदम पीछे लेने को मजबूर करती है परन्तु उनका मजबूत मनोबल उसे हारने से रोकता है और उसका यही मनोबल निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित करता है।

नारी के लिए लैगिक के साथ–साथ सामाजिक व अर्थिक स्तर पर भी असुरक्षा की भावना होती है। सामाजिक स्तर पर परित्यक्ता व विधवा जैसे शब्द उसके मार्ग का रोड़ा बनकर

आगे बढ़ने से रोकते हैं पर इतने पर भी वह अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सही मौका तलाश ही लेती है और कामयाबी के नित नए कीर्तिमान रचती जाती हैं।

हम किसी से कम नहीं :–

चुनौतियों का हँसकर स्वागत करने वाली महिलाऐं आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही है। कल तक भावनात्मक रूप से कमजोर महिलाएँ आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है तथा अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण फैसले स्वयं कर रही है। अपनी क्षमताओं से महिलाओं ने आज पुरूषों को पीछे छोड़ते हुए परिवार व समाज में एक अलग पहचान बनाई है। आत्मनिर्भर बनकर आज महिलाएँ बाजार की हर चुनौतियों का सामना कर रही है।

किशोरावस्था के बदलाव एवं शिक्षण सम्बंधी चुनौतियाँ

अशोक सिंह यादव
बी. एड. विभाग

किशोरावस्था 13 वर्ष से प्रारम्भ होकर 19 साल की आयु तक होता है। किशोरावस्था बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के बीच पारगमन अवधि होती हैं जिससे सामान्यत: कई कारणों से तनाव एवं आँधी की अवस्था भी कहा जाता है।

पियाजे (1969) के अनुसार – तीव्र मानसिंक विकास होने के कारण किशोर वयस्क के समाज में अपने आपको संगठित मानता है और एकनई मनोवृति,मूल्य तथा अभिरूचि विकसित करने में सक्षम हा जाता है।'' शिक्षक वर्ग में उचित दिशा–निर्देश प्रदान कर उन्हें एक परिपक्व तथा सामाजिक मनोवृत्ति कायम करने में मदद करते है जो किशोरों की स्वस्थ समायोजन में काफी सहायक सिद्ध होती है।

शारीरिक विकास – शारीरिक विकास से तात्पर्य बालकों में उम्र के अनुसार शारीरिक आकार, शारीरिक अनुपात, हड्डियों, मांसपेशियों, दाँत तथा तंत्रिकातंत्र में समुचित विकास होता है मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह स्पष्ट हो गया है कि बालकों में शारीरिक विकास एक समानगति से हमेशा नहीं होता कभी तो वह तेजी से होता है और कभी मंद गति से। शारीरिक विकास की चार भिन्न अवस्थाएँ है। जिनमें दो में शारीरिक विकास की गति मंद होती है और दो में शारीरिक विकास की गति तीव्र होती है जन्म के 7–8 महीने के बाद से शारीरिक विकास की गति मंद पड़ने लगती है और एक समान गति से करीब 12 साल तक चलती रहती है। इसके बाद से करीब 15 या 16 साल की उम्र तक शारीरिक विकास की गति एक बार फिर तीव्र हो जाता है। इसे मनोवैज्ञानिको ने तारूण्य विकास लहर कहा है। इसके बाद पूर्व परिपक्वता की प्राप्ति तक बालकों के शारीरिक विकास की गति में मंदता आ जाती है और अवस्था में उसका शारीरिक विकास जिस ऊँचाई तक पहुँच जाता है वह बुढ़ापे तक बना रहता है।

शिक्षकों को शारीरिक विकास की इन विभिन्न अवधियों का ज्ञान रहने से बालको की मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक समस्याओं के भिन्न–भिन्न पहलुओं को समझकर उन लोगो को शैक्षिक निर्देशन देने में मदद मिलती है। किशोरवय छात्र अपने अन्दर आने वाले शारीरिक परिवर्तनों के प्रति अधिक संवदेनशील होता है। उसके अन्तर्मन में कुछ तत्व जैसे स्वयं की सुन्दरता का भाव, बलिष्ठता का अभाव उत्पन्न हो जाते हैं। इन तत्वों का प्रभाव किशोर के पारिवारिक सामाजिक तथा शैक्षिक जीवन पर पड़ता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। किशोरवय छात्रो को शिक्षण के वांछित उद्देश्यों की ओर प्रेरित करने हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक, मित्र–शिक्षक, की भूमिका में हो और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में इन तथ्यों को सम्मिलित करें–

किशोर मनोविज्ञान की अच्छी समझ।
किशोर मन को प्रभावित करने वाले कटाक्षों से बचे।
लोकतांत्रिक वातावरण को बनाए रखना।
तनाव रहित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का विकास।
रूढ़िवादिता से परहेज।

संवेगात्मक विकास – 'संवेग' पद पर अंग्रेजी रूपान्तर है जो लैटिन शब्द 'emovere' से बना है और जिसका अर्थ उत्तेजित करना होता है। संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था का दूसरा नाम है गेलडार्ड के अनुसार– ''संवेग क्रियाओं का उत्तेजक है।''लेकिन संवेग में सिर्फ उत्तेजित अवस्था ही नहीं होती है बल्कि कुछ और भी प्रक्रियाएँ होती है। English के अनुसार– संवेग एक जटिल भाव, की अवस्था होती है जिसमें खास–खास शारीरिक एवं ग्रंथीय क्रियाएँ होती है।''

संवेग एक जंटिल अवस्था होती है। जिसमें आंगिक प्रतिक्रियाएँ जैसे हृदय की गति में परिवर्तन, रक्त चाप में परिवर्तन, साँस की गति में परिवर्तन विभिन्न अन्त: स्श्रावी ग्रथियों के कार्यों में परिवर्तन आदि होती है बालक संवेग की स्थिति में हैं, संवेग में आंगिक , प्रतिक्रियाएँ, अभिव्यंजक व्यहार के अलावा एक आत्मनिष्ठ भाव भी होता है।

किशोरावस्था संवेगात्मक रूप से कई कारणों से अधिक संवेदनशील तथा महत्वपूर्ण होती है। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिको ने किशोरवास्था को आँधी और तनाव की अवस्था की संज्ञा दी है। इस अवस्था में किशोरों को सभी संवेग बताएँ जातें है। किशोरों द्वारा क्रोध, डर एवं दुश्चिंता, डाह, उत्सुकता , जलन, हर्ष, दु:ख तथा अनुराग दिखाए जातें है। परन्तु इस अवस्था में सांवेगिक नियंत्रण अधिक होता है। और वे उद्दीपन या परिस्थितियाँ जिनसे किशोरों में संवेग उत्पन्न होता है। किशोरावस्था में क्रोध सबसे अधिक उस अवस्था में आता है। जब उनके साथ कोई अनुचित व्यवहार करता है या कोई उन्हे बच्चा समझकर व्यवहार करता है।

किशोरावस्था के प्रारम्भिक वर्षो, जैसे 13 से 15 साल में संवेग में तीव्रता तथा अयुक्तिसंगतता अधिक होती है इस अवधि में संवेगों की अभिव्यक्ति अनियंत्रित ढ़ंग से होती है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व हो जाने के बाद किशोरों द्वारा संवेग की अभिव्यक्ति मनमाने ढ़ंग से नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थिति की उपयुक्तता के अनुकूल होती है।

स्कीनर ने बताया कि शिक्षकों के लिए किशोरावस्था

का संवेगात्मक पैटर्न तथा उसका विकास अधिक महत्व रखना है क्योकि उन्हें अपने अध्ययन कार्य में इस अवरूथा के लोगों से सबसे अधिक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास एवं परिवर्तन ही सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने आते हैं। संवेगात्मक परिवर्तनों का प्रभाव अग्रवर्णित रूप में दिखाई पड़ते है।

सर्वाधिक समझदार होने का भाव।

सर्वज्ञता का अनुभव।

नेतृत्व की भावना का विकास।

विरोध के प्रति विद्रोह का भाव।

ये प्रभाव शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान चुनौतियों के रूप शिक्षक के समझ प्रस्तुत होते है। इनके साथ एक शिक्षक को बड़ी सावधनी एवं संवेदनशीलता के साथ अन्तक्रिया करनी होती है जिसको इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

शिक्षक स्वयं को गौण एवं किशोर छात्र को प्राथमिक मानकर चले किशोर प्रदत्त तर्को का प्रत्यक्ष प्रतिरोध न करके, स्वीकार्यता के साथ उन तर्को का परिष्कृत किया जाय। जटिल विरोधाभासी परिस्थितियों का सरलीकरण करते हुए संवेगात्मक विकास को सही दिशा प्रदान करने का प्रयास। नेतृत्व का पूरा अवसर प्रदान किया जाय जिसमें मार्गदर्शन आवश्यक है परन्तु अधिनायकवादी मार्गदर्शन नहीं।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार– ''व्यक्ति के जन्म से परिपक्वता तक की मानसिक क्षमताओं एवं मानिसक कार्यो के उत्तरोत्तर प्रकटन एवं संगठन की प्रक्रिया को मानसिक विकास कहा जाता है।''

किशोररावस्था 13 साल से प्रारम्भ होकर 19–20 साल तक चलता है इस अवस्था में लड़को एवं लड़कियों की मानसिक क्षमता का विकास अपनी चरम सीमा पर होता है। मनोवैज्ञानिको का मत है कि इस अवस्था के अन्त तक लड़कों और लड़कियों की अभिरूचियाँ अधिक विस्तृत हो जाती है। इन अभिरूचियों में समाजिक तथा शैक्षिक अभिरूचियों का महत्व शिक्षा की दृष्टि से अधिक होता है। किशोरावस्था में होने वाले मानसिक विकास के प्रमुख पक्षों को इस प्रकार समक्षा जा सकता है।

चिंतन प्रक्रिया का तार्किक एवं क्रमबद्ध हो जाना।

एकाग्रचित होने की क्षमता का विकास।

सामान्यीकरण की क्षमता।

अभिव्यक्ति एवं संचार करने की क्षमता में वृद्धि।

निर्णय क्षमता का विकास

स्मरण शक्ति का विकास

नैतिकता का विकास

महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों के साथ तादात्म्य

किशोरवय छात्रों के मानसिक के परिणाम स्वरूप विकसित होने वाली इन अभिरूचियों के सन्दर्भ में परिवार एवं शिक्षक दोनो का ही उत्तरदायित्व एवं महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी अवरथा में शिक्षण सम्बन्धी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कुछ तरीके अपनायें जा सकते है। जो इस प्रकार है–

किशोर की चिंतन प्रक्रिया एवं तर्क क्षमता को सकारात्मक विषय उपलब्ध कराना।

एकाग्रचित्त होने की क्षमता का विकास होना चाहिए इस दृष्टि से रचनात्मक कार्यो में व्यस्तता बढ़ायी जाय।

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से अनुभवों के सामान्यीकरण, स्मरण शक्ति एवं निर्णय क्षमता की वृद्धि हेतु अधिक से अधिक अवसर प्रदान करना।

जब किशोर अपने अन्दर नैतिक विकास करते हुए महान व्यक्तियो के साथ तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास कर रहा हो तो उसके प्रयास को सकारात्क पुनर्बलन एवं सहयोग प्रदान करना।

प्रस्तुत विभिन्न प्रकार के तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि किशोरवस्था मानव जीवन की सबसे कठिन एवं जटिल अवस्था है। यही अवस्था है जो मनुष्य के भावी जीवन की दिशा में निर्धारक है। इस अवस्था में प्राप्त सकारात्मक मार्गदर्शन किशोर को एक सफल नैतिकता से ओत –प्रोत महान व्यक्ति के रूप में स्थापित कर सकता है और सकारात्मक एवं सक्षम मार्गदर्शन के अभाव में यही किशोर अपनी दिग्भ्रमित अभिरूचियों एवं क्षमताओं के वंशीभूत होकर प्रचण्ड विध्वंसक व्यक्ति का रूप भी धारण कर लेता है। इस सन्दर्भ के नि:संदेश शिक्षक एवं शिक्षण व्यवस्था की महति भूमिक निधारितहोती है। इस भूमिक का निर्वहन सफलता पूर्वक करने हेतु यह अनिवार्य हो जाता है कि एक शिक्षक किशोरावस्था के मनोविज्ञान को भलि–भाँति समझे एवं नवाचार का पालन करते हुए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को गति प्रदान करें।